रेल राजभाषा

अंक - 142 | जुलाई-सितम्बर, 2025

रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड), नई दिल्ली

अश्विनी वैष्णव
Ashwini Vaishnaw

रेल, सूचना और प्रसारण एवं इलेक्ट्रॉनिकी
और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री
भारत सरकार
**Minister of Railways, Information & Broadcasting
and Electronics & Information Technology
Government of India**

संदेश

हर वर्ष 14 सितम्बर को मनाया जाने वाला *हिन्दी दिवस* हमें हिन्दी के गौरवशाली इतिहास, सांस्कृतिक विरासत और इसके वैश्विक महत्व की याद दिलाता है। यह दिन हमें हिन्दी के प्रचार-प्रसार और उसकी समृद्धि के लिए संकल्पित होकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

हिन्दी हमारी संस्कृति, परंपरा और एकता की अमूल्य धरोहर है। यह केवल संचार का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी पहचान और गर्व का प्रतीक है। अपनी सरलता और समृद्धि के कारण हिन्दी ने राष्ट्रीय ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है।

आइए, इस अवसर पर हम संकल्प लें कि अपने कार्य, व्यवहार और जीवन के हर क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाएँगे। हिन्दी का सम्मान और संवर्धन करना केवल भाषा के प्रति हमारा कर्तव्य नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र की प्रगति और सांस्कृतिक गौरव का भी आधार है।

आप सभी को *हिन्दी दिवस 2025* की हार्दिक शुभकामनाएँ।

अश्विनी वैष्णव

Room No : 341, Rail Bhawan, Raisina Road, New Delhi-110001
Tel. : +91-11-23386645, 23381213 Fax : +91-11-23387333

निदेशक राजभाषा की कलम से

सुधी पाठकगण,

वैसे तो सामान्य तौर पर माना जाता है कि भारत अनेक पर्वों व त्यौहारों का देश है। ये पर्व व त्यौहार हमारी परंपराओं के साथ–साथ नदी–पहाड़ों, खेत–खलिहानों और स्थानीय मान्यताओं से भी जुड़े होते हैं। अब तो इस श्रृंखला में राजभाषा के प्रचार–प्रसार व संवर्धन के लिए मनाए जाने वाला 14 सितंबर, 1949 का दिन भी एक राष्ट्रीय पर्व बन कर जुड़ गया, जिसे हम हिंदी दिवस के रूप में जानते हैं और बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। आज हिंदी दिवस देश व विदेश में बड़े ही आदर के साथ मनाया जाता है। यह देश की राजभाषा के प्रति अनुराग ही तो है कि कहीं हिंदी दिवस तो कहीं हिंदी सप्ताह, कहीं हिंदी पखवाड़ा तो कहीं हिंदी माह के रूप में मनाया जाता है।

किसी देश की राजभाषा किसी क्षेत्र विशेष अथवा संस्कृति विशेष की भाषा नहीं होती, बल्कि वह समूचे राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करती है और देश में मौजूद सभी भाषाओं एवं संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व करती है, तभी तो उसे वैश्विक मंचों पर देश की राजभाषा का गौरव प्राप्त होता है। हिंदी को राजभाषा का गौरव बस यूँ ही नहीं मिल गया है। इसके लिए संविधान सभा में विस्तार से चर्चा–परिचर्चा हुई। विरोध के सुर भी सुनाई दिए। फिर भी सभी तर्कों पर विमर्श के बाद हिंदी को देश की राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ।

आज हिंदी दुनिया की तीसरी सबसे अधिक बोली व समझी जाने वाली भाषा बनी है। इसके विकास में करोड़ों देशवासियों के साथ–साथ विश्व के कोने–कोने में फैले प्रवासी भारतीयों, हिंदी एवं अनेक विदेशी भाषा प्रेमियों का योगदान है। हमें जानकर हैरानी होती है, जब कोई सुदूर दक्षिण या पूर्वोत्तर भारत के गाँवों से निकल कर हिंदी सीखने व बोलने का प्रयास करता है।

भारतीय रेल भी अपनी पटरियों पर छुक–छुक करते इंजनों के साथ भाषा विस्तार के इस उद्देश्य को खूब बढ़ावा दे रही है। भारतीय रेल अपने राजभाषा कार्यान्वयन अभियान के तहत प्रांतीय भाषाओं को बिना कुछ नुकसान पहुँचाए संपूर्ण भारत को एक भाषाई सूत्र में बाँधने का प्रयास भी कर रही है और इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए 'रेल राजभाषा' पत्रिका का प्रकाशन भी कर रही है, ताकि भारत के भाषाई सौहार्द्र को पूरी शिद्दत से आगे बढ़ाया जाए और विश्व मंच पर हिंदी को स्थापित किया जाए। पत्रिका के 142वें अंक में भारतीय रेल में महिला कर्मियों के संघर्ष, विकसित भारत में रेलवे का योगदान, हिंदी भाषा का महत्त्व आदि आलेखों के साथ–साथ साहित्य की अन्य विधाओं की रचनाओं को शामिल भी किया गया है।

मैं, इस अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करती हूँ। साथ ही आपसे अपेक्षा रखती हूँ कि हम सभी 'हिंदी दिवस' जैसे राष्ट्रीय पर्व के अवसर पर यह संकल्प लें कि हिंदी को उसके लक्ष्य व सम्मान दिलाने का हर संभव प्रयास करेंगे।

शुभकामनाओं सहित .....

वी सुगुणा

(डॉ. वी. सुगुणा)

निदेशक, राजभाषा, रेलवे बोर्ड

रेल राजभाषा

वर्ष 2025 अंक : 142 त्रैमासिक पत्रिका : जुलाई से सितम्बर, 2025

संरक्षक
श्री सतीश कुमार
अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी,
रेलवे बोर्ड

परामर्शदाता
आर. राजगोपाल
महानिदेशक (मानव संसाधन)

मार्गदर्शक
वी.जी. भूमा
अपर सदस्य (मानव संसाधन)

सलाहकार
विनीता वर्मा
कार्यपालक निदेशक, स्था. (श्रम कानून)

प्रधान संपादक
डॉ. वी. सुगुणा
निदेशक, राजभाषा

उप संपादक
सतविंदर सिंह
उप निदेशक, राजभाषा

सह संपादक
शशि बाला
सहायक निदेशक, (पत्रिका)

संपादन सहयोग
अखिलेश कुमार
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

पता :–
राजभाषा निदेशालय,
कमरा नं. 301, पत्रिका अनुभाग
कॉफमो कार्यालय परिसर
तिलक ब्रिज, नई दिल्ली–110002
ई–मेलः
patrikahindi@gmail.com

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक / कवि	पृष्ठ
1	महिला पहचान से परे : भारतीय रेल में महिलाओं की संख्या और उनका संघर्ष	वी. जी. भूमा	5
2	पेड़ और मनुष्य (कविता)	संतोष कुमार झा	8
3	अपरिभाषित नारी (कविता)	तेजपाल चावला	8
4	विकसित भारत में रेलवे का योगदान	सविता वाणी	9
5	खेला (कविता)	हर्ष डी. सिंह	12
6	अपनों से मिलाती रेल	सुभाष सेतिया	13
7	जीवन का सार (कविता)	अंजली शर्मा	14
8	सतरंगी इंद्रधनुष	डॉ. कमलेन्द्र कुमार	15
9	दिन कुछ ऐसे गुज़ारता है कोई (कहानी)	प्रो. (डॉ.) मंजु शर्मा	16
10	संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा रेल कार्यालयों के निरीक्षण की झलकियां		19
11	रेलवे बोर्ड राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 155वीं बैठक की झलकियां		20
12	कमलापति त्रिपाठी राजभाषा स्वर्ण पदक एवं रजत पदक पुरस्कार–2023 वितरण समारोह की झलकियां		21
13	कवि एवं कथाकार नागार्जुन तथा माखनलाल चतुर्वेदी की जयंती समारोह की झलकियां		24
14	क्षेत्रीय रेल प्रशिक्षण संस्थान, भुसावल में अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव–2024 के आयोजन की झलकियां		25
15	राजभाषा निदेशालय द्वारा रेलवे बोर्ड में आयोजित पुस्तक चर्चा कार्यक्रम एवं 'कंठस्थ 2.0' कार्यशाला की झलकियां		26
16	कानपुर : स्वाद, संस्कृति और संघर्ष का शहर	मंजुल मिश्रा	27
17	मान बढ़ाती हिन्दी (कविता)	अतुल कुमार	28
18	हिन्दी भाषा का महत्त्व : एक लघु चर्चा	अभिषेक कुमार प्रसाद	29
19	अभिनय प्यार का (कविता)	विजया गोस्वामी	30
20	भारतीय रेल की आत्मकथा (कविता)	प्रतीक भारद्वाज	31
21	जीवन में उत्कृष्टता के लिए अनिवार्य है श्रेष्ठ विकल्पों का चयन	सीताराम गुप्ता	32
22	बंटवारा (कहानी)	सोनाली सुधास्मिता त्रिपाठी	34
23	नानी का गाँव (कविता)	रेखा शाह आरबी	35
24	राजभाषा के प्रचार–प्रसार में अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन जैसे मंचों का महत्त्व	हरे राम मिश्र	36
25	संकल्प (कविता)	अतुल कुमार	38
26	लाक्षागृह (कहानी)	डॉ. रंजना जायसवाल	39
27	मैं (कविता)	निशांत कुमार	42
28	कंक्रीट के जंगल में (कविता)	गौरव चांदना	42

महिला पहचान से परे: भारतीय रेल में महिलाओं की संख्या और उनका संघर्ष

नीता (बदला हुआ नाम) ने बड़ी ही सावधानी से अपनी साथी महिला को औज़ार पकड़ाए और कुछ देर वहीं खड़ी रही। उसने अपने चारों ओर देखा। कुछ देर तक नीचे रेल की पटरियों को देखती रही। पटरियों के पार हरे भरे खेत थे, नारियल के पेड़ थे और कुछ दूरी पर पहाड़ियां थीं। उसके ठीक ऊपर नीला आसमान था मानो वह अपना हाथ थोड़ा सा ऊँचा उठाए तो आसमान छू ही लेगी। उसे लगा कि वह सातवें आसमान पर है। नीले आसमान और उसके बीच सिर के ठीक ऊपर बिजली की तारें थीं, जिसकी उसने अभी अभी मरम्मत की थी। बिलकुल, वह रेलगाड़ी की छत पर खड़ी थी। यह उसके लिए "छैयां छैयां" पल ही था। माना कि उसने खूबसूरत साड़ी नहीं पहनी थी और न ही वह नाच रही थी। पर वह सिर के ऊपर बिजली की तारों को ठीक करने का अपना काम कर रही थी। साथ ही वह इतनी ऊँचाई से दुनिया देखने के पल का लुत्फ उठा रही थी। वह जब भी अपना काम करती, इसी तरह खुशी से काम पूरा करती।

नीता रेलवे में ओ.एच.ई. तकनीशियन के पद पर थी। सेल्फ प्रोपेल्ड के टॉवर वैगन पर खड़े होकर हाई पॉवर बिजली की तारों की मरम्मत करना उसका काम था। उसकी टीम में सारी महिलाएं ही थीं, जो भारतीय रेल में ओ.एच.ई. तारों को ठीक करने के काम में प्रशिक्षित थीं।

मीना (बदला हुआ नाम) ने बड़े ही गर्व से बैटरी प्लेटों की सुंदर तरीके से की गई वैल्डिंग को देखा। उसने अपने दस्ताने, चश्मा और हेल्मेट उतारा और ज्वाइंट को चेक किया कि वैल्डिंग ठीक से हुई है या नहीं। उसके साथ ही तीन महिलाकर्मी खड़ी थीं, जो पूरी तल्लीनता से वैल्डिंग कर रही थीं। वह अपने आप को खुशनसीब मान रही थी कि वह यहाँ है। क्योंकि दस साल पहले जब उसने वैल्डिंग का काम शुरू किया था तो उसको सिखाने और प्रशिक्षण देने के लिए कोई महिला नहीं थी। पुरुषों की दुनिया में वह अकेली महिला थी। मीना एक वरिष्ठ तकनीशियन है, महिला टीम की लीडर है और मुंबई में माटुंगा वर्कशॉप में हैवी वैल्डिंग का काम करती है। मध्य रेलवे की माटुंगा वर्कशॉप में रेलवे के सवारी डिब्बों की मरम्मत की जाती है।

रानी ने पिछले स्टेशन के कॉलिंग आउट सिगनल को पार करने के बाद अपने हाथ सीधे किए। उसे अगले 8–9 कि.मी. तक पटरियों के बीच और ओवर हेड तारों पर नजर रखनी थी। उसे यह सुनिश्चित करना था कि जिन हजार यात्रियों की जिम्मेदारी उसके कंधों पर है, उनके साथ कोई अप्रिय घटना न होने पाए। वह अगले आने वाले स्टेशन की ओर देखने लगी। गाड़ी उस स्टेशन पर दस मिनट तक खड़ी रही और गाड़ी में पानी भरा गया। वह बड़ी ही तेजी से रेलगाड़ी से नीचे उतरकर इंजन के साथ वाले सवारी डिब्बे के शौचालय में गई और जल्दी ही वापस इंजन में चढ़ गई। जी हां, रानी सहायक लोको पायलट का काम करती है। उसकी रूल बुक में बायो ब्रेक (बाथरूम जाने का समय) के बारे में कुछ नहीं लिखा गया है। बस वह इसी तरह से काम चला सकती थी। काम पर आने के शुरुआती वर्षों में उसे कई घंटों तक खुद को नियंत्रित करना पड़ता था, क्योंकि पुरुष सहयोगियों के सामने झिझक रहती थी और कुछ कह नहीं पाती थी।

पर अब वह समझ गई है कि ऐसे ही काम चलाना पड़ेगा। अब वह अपने पुरुष सहयोगियों को बताकर जाने में झिझकती नहीं है। क्योंकि अभी भी प्रायः कम ही ऐसा होता है कि दो महिलाओं को एक साथ इस काम पर रखा जाए। उसने और उसकी महिला साथियों ने यह

तरीका समझ लिया है और अब आराम से अपना काम करती हैं। अब वह सिगनल पर भी पूरा ध्यान देती है और आगे पटरियों पर भी नज़र रखती है। अब वह काफी दूर निकल आई है, परंतु अभी भी मीलों आगे जाना है।

नीता, मीना और रानी ऐसी महिलाएं हैं, जिनके बारे में हम आम तौर पर देखते–सुनते नहीं हैं। इसके बावजूद वे हमारे लिए काम कर रही हैं, ताकि हमें कोई परेशानी न हो। ये वे गुमनाम जांबाज़ महिलाएं हैं, जिन्होंने अपने तरीके से सीमाओं को तोड़ दिया है। ये वे ईमानदार और कर्मठ महिलाएं हैं, जिन्होंने अपने लिए कड़ा रास्ता चुना है। ये महिलाएं महिला शक्ति की जीती जागती मिसाल हैं।

भारतीय रेल में महिलाकर्मियों की संख्या बहुत कम है। पर सबसे रोचक तथ्य यह है कि आज महिलाएं उस क्षेत्र में काम कर रही हैं, जहां कुछ साल पहले तक कभी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। हालांकि संख्या मायने नहीं रखती है। काम करने की इच्छा भी महत्त्व रखती है और आज पुलिस और भारतीय रेल में महिलाएं इसके उदाहरण हैं।

पचास साल पहले तमिलनाडु में पुलिस फोर्स ज्वाइन करने वाली अग्रणी महिलाओं को मैं सलाम करती हूँ। साथ ही मैं यह भी कहना चाहती हूँ कि इन महिलाओं ने पुरुष प्रधान क्षेत्रों में आने के लिए दूसरी अन्य महिलाओं को प्रेरित किया और करियर के उन चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में कदम रखा, जिनके बारे में मैंने ऊपर उल्लेख किया है।

रेलवे में अधिकारी के तौर पर इन महिलाओं की तुलना में मेरा जीवन कुछ आसान है, परन्तु यह भी सही है कि मेरे पुरुष सहयोगियों की तुलना में यह आसान नहीं है। उदाहरण के लिए, किसी नए राज्य के नए शहर में तैनाती होने पर यदि कोई घर नहीं मिलता है तो किसी पुरुष की तुलना में मेरे लिए एक सुरक्षित जगह की तलाश करना कठिन काम है। पर इससे क्या हम यह कह सकते हैं कि हम महिला पहचान के बूते पर काम से समझौता नहीं कर सकते हैं।

हम में से लगभग हरेक महिला अपने सहयोगियों, विशेष रूप से पुरुष सहयोगियों से यही कहना चाहती है कि सबसे पहले हमें एक सहयोगी समझा जाए और महिला होने की नजर से न देखा जाए। क्या यह समझना बहुत कठिन है? अगर यह बात समझ में आ जाए तो कार्य स्थल पर हमारी महिला पहचान संबंधी समस्याएं बड़ी आसानी से सुलझ जाएंगी। हमें कितनी बार सीमा रेखाएं तय करनी होंगी कि हमारे सहयोगियों के लिए क्या स्वीकार्य है और क्या स्वीकार्य नहीं है। हमें पुरुष प्रधान समाज से कितनी बार नैविगेट करना होगा। हमें केवल यह सिद्ध करने के लिए कितने चुनौतीपूर्ण काम करने होंगे कि हम वह हर काम कर सकती हैं, जो हम करना चाहती हैं।

दशकों पहले मुझे याद है, जब मैं एक प्रोबेशनर थी, मुझे कहा गया कि यदि मुझे रात को पट्रोलिंग की ट्रेनिंग नहीं करनी है तो कोई बात नहीं, क्योंकि महिलाओं के लिए स्थितियां अनुकूल नहीं हैं। संभवतः मेरे उच्चाधिकारियों को यह याद नहीं होगा कि उन्होंने ऐसा ही कहा था। मुझे गुजरात के समुद्र तट पर एक सामान्य पट्रोल बोट पर रात को पट्रोलिंग पर जाना पड़ा। यह एक अलग कहानी है कि उस रात हमने 278 किलो प्रतिबंधित सोना जब्त किया था। उस दिन बारिश भी बहुत हो रही थी। परन्तु मेरा कहना है कि हम केवल अपनी महिला पहचान के चलते अपनी जिम्मेदारियां भूल नहीं सकते हैं। बावजूद, इसके महिला होने के कारण हमें कुछ विशेष किस्म के काम करने नहीं दिए गए।

हालांकि मेरे वरिष्ठ पुलिस सहयोगी मुझसे सहमत होंगे कि उनकी सफलता का पहला मंत्र, अर्थात् कोई भी काम अधूरा न छूट जाए ही हमारे काम का अभिन्न अंग है, क्योंकि हम महिलाएं हैं इस मंत्र को कुछ इस प्रकार लिखा जाए कि करियर में ऐसा कोई काम नहीं है, जो हम महिलाएं नहीं कर सकती हैं। ऐसा कुछ नहीं है कि ये महिलाओं का काम नहीं है। अगर ये मेरे काम का एक हिस्सा है तो मेरा कर्तव्य है कि मैं उस काम को पूरा करूं।

मेरे जीवन ने मुझे सफलता का एक और मंत्र सिखाया

कि विशेष तौर पर काम के समय हम महिलाओं को एक–दूसरे की सहायता करनी है। ऐसी धारणा बनी हुई है कि किसी महिला अधिकारी के साथ काम करना बहुत मुश्किल है। परन्तु हर बार किए गए अध्ययनों में यह साबित हुआ है कि टीम में महत्त्वाकांक्षी महिलाओं के लिए महिला प्रबंधक श्रेष्ठ साबित हुई हैं। महिलाएं संभवतः ज्यादा मजबूत होती हैं, क्योंकि वे बहानों को भांप सकती हैं। परन्तु यदि हम बहाने बनाने वाले नहीं हैं तो हमें महिला से बेहतर अधिकारी नहीं मिल सकता। इसलिए, आइए हम अपनी महिला साथियों का सम्मान करें एवं उनके साथ सहयोग करें।

चुनौतीपूर्ण काम करने वाली हम सब महिलाओं को, चाहे हम पुलिस में हों या रेलवे में, ऐसा समझा जाता है कि हम पाप कर रही हैं। हम अपने परिवार की उचित ढंग से देखभाल नहीं कर पा रही हैं। अब इससे ज्यादा मैं क्या कहूं कि पाप कर रही हैं, ऐसा कहना सदैव सही नहीं है। परन्तु मैं यह भी कहना चाहती हूं कि इस पाप से मुक्त होना कठिन है। शायद इसी पाप की वजह से ही हम अपना काम तेजी से कर पाती हैं और शाम को दिन ढलने से पहले घर पहुँचना चाहती हैं, ताकि समय पर घर के काम भी निपटा सकें। इसी पाप कर्म के चलते ही ऑफिस में देर तक रुकने से बचती हैं। हमें अपने कामों की प्राथमिकता तय करनी होगी, ताकि सही ढंग से काम कर करें। यही प्राथमिकता तय करना ही हमें आगे बढ़ने की हिम्मत देता है।

साथ ही, यह भी जरूरी है कि हम अपने दैनिक जीवन और काम में संतुलन बनाकर चलें, जो हमारे आस–पास के परिवेश के लिए भी जरूरी है। संभवतः हम सबने वह तस्वीर देखी है, जिसमें एक महिला पुलिसकर्मी अपनी ड्यूटी कर रही है और अपने बच्चे की देखभाल भी कर रही है। मैं उस महिला को सलाम करती हूं। मैं भी कई बार स्टेशनों पर निरीक्षण के दौरान अपने बेटे को उसकी आया के साथ लेकर गई हूं। मुझे उसके खाने–पीने का सामान और कपड़े भी रखने पड़ते थे। कई बार छुट्टी वाले दिन मैं अपने बेटे को उसकी आया के साथ लेकर ऑफिस आई हूं, ताकि अपने काम समय पर निपटा सकूं। नई जगह पर जाकर भी बेटे को लगता था कि उसकी मां आस–पास ही है। मुझे भी तसल्ली रहती थी कि बेटे को मां की जरूरत महसूस होने पर मैं उसके साथ ही हूं।

यहां यह जरूरी नहीं है कि हम जो काम करते हैं, वह हमारे पुरुष सहयोगियों से अलग हो बल्कि यह महत्त्वपूर्ण है कि हम उस काम को कैसे करती हैं। मैं खुलकर कहना चाहती हूं कि महिलाओं के काम करने की शैली अलग है, घर पर भी और कार्यस्थल पर भी। यदि हम अच्छी तरह से समझ–बूझ कर काम करें तो हमें काम करते समय चिल्लाना नहीं है या बदतमीजी नहीं करनी है।

एक महिला पुलिसकर्मी को देखकर मेरा नजरिया बदल गया।

कुछ दशकों पहले जब मैं कॉलेज में फाइनल इयर में थी, मैं मद्रास (अब चेन्नै) में माउंट रोड से गुजर रही थी। यह सबसे व्यस्त चौराहा है। मैं सड़क पार कर रही थी और मैं एक ऐसी जगह पर रुक गई, जहां मुझे नहीं रुकना चाहिए था। चौराहे पर बत्ती हरी हो गई थी। सड़क पार करना मुश्किल हो गया। उस चौराहे पर एक महिला पुलिस कांस्टेबल तैनात थी। उसने मुझे बुलाया और बड़े प्यार से कहा कि अब आप जैसी पढ़ी–लिखी महिलाएं ही ऐसे सड़क पार करेंगी तो क्या होगा। आपको तो दूसरों को सिखाना चाहिए। मैं अनपढ़ लोगों को कैसे समझाऊंगी।

उसने जो कहा सो कहा, परन्तु उसने मुझे जिस तरीके से समझाया, वह बात मेरे दिल को छू गई। यदि वह चिल्लाकर मुझे कुछ कहती तो शायद मैं यह सबक न सीखती। परन्तु उसने जिस ढंग से मुझे समझाया, उससे मेरी दुनिया बदल गई। मैं सड़क किनारे बने "अविन" बूथ में बैठ गई। उसकी हर बात पर मैंने बहुत सोच–विचार किया और मैंने फैसला कर लिया कि मैं सिविल सर्विस ज्वाइन करूंगी और अपने आस–पास के लोगों का जीवन बेहतर बनाऊंगी। वह दिन और आज का यह दिन, मैं आज यहां पर हूं। मैं उस महिला पुलिसकर्मी को धन्यवाद देती हूं।

मुझे नहीं पता कि आज वह कहां है। उसे शायद इस घटना के बारे में कुछ याद भी न होगा। पर मैं उसे दिल से धन्यवाद देती हूं और उन हजारों महिला पुलिसकर्मियों को सलाम करती हूं, जिन्होंने इस रास्ते पर चलने की हिम्मत दिखाई।

वी. जी. भूमा
आई.आर.पी.एस., अपर सदस्य, रेलवे बोर्ड

पेड़ और मनुष्य

मैं ने पेड़ से पूछा, तुम युगों–युगों तक रहे अचल,
और अविचलित तुमने दिया, पथिकों को छाया और फल।

फिर भी तुम रहे सदा प्रसन्न और हरे–भरे।
तुमने निरंतर आश्रय दिया, सहस्त्रों पशु–पक्षियों को।

अनवरत अविचल और पाई उपेक्षा उनकी प्रतिपल।
तुम क्यों नहीं विद्रोह करते, अपनी ऐसी दशा पर।

और कर जाते पलायन इस धरा को छोड़कर?
पेड़ ने कहा- मैं ज़मीन से जुड़ा हूँ।

इसीलिए खड़ा हूँ और हरा भरा हूँ।
इसी धरती से है मेरा अस्तित्व,

इसी से है मेरी आन।
मैं ज़मीन छोड़ दूँगा तो, शीघ्र ही गंवा दूँगा,
अपना अस्तित्व अपनी जान, क्योंकि इस मिट्टी से ही है मेरी पहचान।

काश! मानव भी इस सत्य को समझ पाता
और अपनी मिट्टी से जुड़ा रहता, तो सदैव सुखी, संतुष्ट और हरा भरा रहता।

सन्तोष कुमार झा
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड

अपरिभाषित नारी

तुम्हारे लाड़ का क्या हिसाब लिखूं
तुम्हें बताने को कौन सी किताब लिखूं
जो गिन सके तुम्हें, वह गिनती अभी बनी नहीं
मांग सके जो तुम्हें निराधिकार, वह विनती अभी बनी नहीं।

और जो लगा सके आप की मुस्कान की बोली,
वह कीमत तो अभी ठनी नहीं,
और जो बना सके आपके सच्चे स्नेह की मूर्त,
हे नारी, वह सोने की मिट्टी अभी सनी नहीं।

किन्तु अपने पर कभी आ जाए तो स्नेह आपका प्रायः
अनमोल बिक जाता है
प्रेम–सत्कार के लेश–अंश पर ही यह आजीवन
प्रेम–गीत गाता है।

अतः हे नारी, तुम प्रेम की सजीव अभिव्यक्ति हो,
कायर को भी अजेय वीर बना दो तुम ऐसी विराट शक्ति हो
तुम्हारे अस्तित्व का क्या मैं परिमाण लिखूं
स्वयं–सिद्धा का मैं अकिंचन क्या प्रमाण लिखूं

हर इतिहास–साहित्य–विज्ञान तुम बिन आज भी अधूरा है
बताओ संसार का कौन–सा ज्ञान तुम्हारे बिन पूरा है?

तुम–सी संपूर्ण बनना चाहती है संसार की हर विधा,
पर सारे प्रयासों से भी कोई विधा अभी तक संपूर्ण बनी नहीं।

तेजपाल चावला
उपनिदेशक, रेलवे बोर्ड

विकसित भारत में रेलवे का योगदान

रेल का नाम लेते ही बचपन के वे दिन सहसा मन में कौंध जाते हैं, जब हम एक–दूसरे को पीछे से पकड़कर दौड़ते हुए 'छुक–छुक रेल 'का खेल खेलते थे। भक–भक धुआँ उड़ाती ट्रेन भी अब पुराने जमाने की बातें हो गईं। दिनांक 16 अप्रैल,1853 को भारत में सबसे पहले रेल बंबई से थाणे के बीच तक 34 कि.मी. तक चलाई गई। अपने जन्म के साथ ही रेल राष्ट्र के विकास में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर चुकी थी। सूचना क्रांति लाने में रेल का प्रमुख स्थान रहा है।

आज भारतीय रेल विश्व के सबसे बड़े रेल नेटवर्क में से एक है। रेल ने समस्त भौगोलिक सीमाएँ पहाड़, रेगिस्तान, मैदान, नदी, झील, यहाँ तक कि समुद्र को लांघ लिया है। रेल राष्ट्रीय, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, ऐतिहासिक तथा दार्शनिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रभाव डाल रही है। आज देश में यातायात के विभिन्न साधन उपलब्ध हैं, परन्तु रेल की बात ही कुछ और है। रेल से अमीर–गरीब, मध्यम वर्ग का हर व्यक्ति अपनी सुविधा अनुसार यात्रा कर सकता है।

यह न केवल यात्रियों और माल के आवागमन का प्रमुख साधन है, अपितु भारत के सामाजिक–आर्थिक विकास में भी इसकी भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। 'विकसित भारत' के संदर्भ में रेलवे एक सशक्त कड़ी के रूप में उभर रहा है, जो देश के हर कोने को जोड़ता है। आर्थिक गतिविधियों को गति देता है और सामाजिक एकता को मजबूती प्रदान करता है। पिछले वर्ष 700 करोड़ से अधिक लोगों ने यात्रा के साधन के रूप में रेल को चुना।

रेल हमारी जीवन रेखा है। भारतीय रेल सतत विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराती है। भारतीय रेल एशिया का सबसे बड़ा और विश्व का चौथा सबसे बड़ा रेल नेटवर्क है। यह प्रतिदिन लगभग 2.4 करोड़ यात्रियों और 30 लाख टन माल को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाता है। भारतीय रेल की पटरियों की कुल लंबाई लगभग 68,000 कि.मी., 8,000 से अधिक स्टेशन तथा 12000 रेलगाड़ियों के साथ देश के कोने–कोने में एक विस्तृत जाल बिछा हुआ है। इसके अलावा, यह देश के औद्योगिक विकास, रोजगार सृजन और सामाजिक समरसता में भी योगदान देती है। प्राकृतिक आपदा, युद्ध आदि के समय रेलगाड़ियों का दायित्व और अधिक बढ़ जाता है। बाढ़, भूकंप, महामारी, अकाल एवं कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी रेल काम करती है। कहा जाता है कि रेल कभी रुकती नहीं।

भारत के विकास में रेलवे का योगदान

1. रेल द्वारा परिवहन ढुलाई आय में वृद्धि

माल ढुलाई में रेलवे की महत्ता समय के साथ बढ़ती जा रही है। 2013–14 में भारतीय रेल ने लगभग 105.5 करोड़ टन माल की ढुलाई की। 2024–25 के बीच यह ढुलाई बढ़कर 161.7 करोड़ टन हो गई है। इससे भारतीय रेल दुनिया का दूसरी सबसे बड़ी माल ढोने वाली रेलवे बन गई है। रेल की माल परिवहन की लागत लगभग आधी है। इसका अर्थ है कि न केवल व्यवसायों, अपितु पूरी अर्थव्यवस्था के लिए बड़ी बचत।

2. औद्योगिक विकास में सहायक

भारतीय रेल ने कृषि के उपकरण, खाद, बीज, खाद्यान्न, कपास, फल, सब्जी, दूध एवं अन्य उत्पाद, कोयला, इस्पात, सीमेंट, लोहा, उर्वरक, पेट्रोलियम और अन्य औद्योगिक वस्तुओं के परिवहन के माध्यम से देश के औद्योगिक विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। रेलवे ने कच्चे माल को उत्पादन स्थलों तक पहुँचाने और तैयार माल को बाजार तक पहुँचाने का काम सहज बनाया है। इसने उद्योगों को किफायती और समयबद्ध परिवहन सुविधा दी, जिससे उत्पादन लागत में कमी आई और प्रतिस्पर्धा बढ़ी।

3. ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ावा

रेलवे ने देश के विभिन्न भागों में व्यापार और वाणिज्य को बढ़ावा दिया। रेल नेटवर्क के विस्तार ने किसानों को अपने उत्पादों को बड़े बाजारों में भेजने की सुविधा दी। इससे कृषि उपज का उचित मूल्य मिलने लगा और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिली। व्यापारिक दृष्टिकोण से रेलवे ने थोक और खुदरा व्यापार को भी गति दी, जिससे देश की अर्थव्यवस्था में सक्रियता आई।

4. रोजगार सृजन में वृद्धि

भारतीय रेल देश की सबसे बड़ा नियोक्ता है, जिसमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से लगभग 12 लाख लोग कार्यरत हैं। इसके अलावा रेलवे निर्माण, मरम्मत, खानपान, सफाई, सुरक्षा और प्रबंधन आदि से भी लाखों लोगों को रोजगार मिलता है। विकसित भारत के निर्माण में रेलवे का यह पहलू सामाजिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

5. राष्ट्रीय एकीकरण में सहायक

रेलवे विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और धर्मों के लोगों को एक–दूसरे से जोड़ने का काम करता है, जिससे सामाजिक एकता और राष्ट्रीय एकीकरण मजबूत होता है। पर्व, त्यौहार, तीर्थयात्रा और पर्यटन के अवसर पर रेलवे ने लोगों को एक–दूसरे के करीब लाता है और सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा देता है। रेल के किसी भी डिब्बे में संपूर्ण भारत की झलक दिखाई देती है, जब भिन्न–भिन्न रीति–रिवाजों, धर्म और खान–पान के लोग एक साथ रहते हैं, तब उनका प्रभाव एक–दूसरे पर अवश्य पड़ता है। कहते हैं– "रेल की भाषा, मेल की भाषा"।

6. विशेष गाड़ियों की व्यवस्था से आय में वृद्धि

रेल विभाग द्वारा विभिन्न आयोजनों के अवसर पर दुर्गापूजा स्पेशल, छठपूजा स्पेशल, प्रसिद्ध मेलों के अवसर पर धार्मिक स्थलों तक स्पेशल ट्रेनें चलाई जाती हैं। इससे जहाँ यात्रियों को आवागमन की सुविधा मिलती है, वहीं रेल विभाग की आय में वृद्धि होती है और देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलती है।

रेलवे के आधुनिकीकरण के प्रयास

'विकसित भारत' की परिकल्पना के अनुरूप भारतीय रेल ने कई आधुनिकीकरण परियोजनाएँ शुरू की हैं। इनमें प्रमुख हैं :–

1. बुलेट ट्रेन योजना

अहमदाबाद और मुंबई के बीच भारत की पहली बुलेट ट्रेन परियोजना पर कार्य प्रगति है। यह परियोजना जापानी तकनीक के सहयोग से तेज, सुरक्षित और सुविधाजनक यात्रा का अनुभव कराएगी। इसका उद्देश्य यात्रा के समय को काफी कम करना और यात्रियों को विश्वस्तरीय सेवाएँ देना है।

2. रेल विद्युतीकरण से पर्यावरण संरक्षण

रेलवे का विद्युतीकरण, न केवल ईंधन पर निर्भरता को कम करता है, अपितु पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। भारतीय रेल ने 2030 तक 'नेट जीरो कार्बन उत्सर्जन' का लक्ष्य रखा है, जिसके अंतर्गत संपूर्ण रेल नेटवर्क को विद्युतीकृत किया जा रहा है। सड़क के स्थान पर रेल के माध्यम से माल ढुलाई से इस बदलाव ने 141.3 करोड़ टन से अधिक कार्बन डाई आक्साइड उत्सर्जन को कम करने में मदद की है।

यह 121 करोड़ पेड़ लगाने के बराबर है। वर्ष 2014 से

पहले के 60 वर्षों में भारतीय रेल ने 21,000 कि.मी. रेलमार्ग का विद्युतीकरण किया, जबकि पिछले 11 वर्षों में 47,000 कि.मी. रेलमार्ग का विद्युतीकरण हुआ। आज हमारे ब्राड गेज का 99 प्रतिशत भाग विद्युतीकृत है। भारतीय रेल स्टेशनों, कारखानों और कार्यशालाओं के लिए हरित ऊर्जा का उपयोग तेजी से कर रहा है। रेलगाड़ियों के परिचालन के लिए अधिक हरित ऊर्जा प्राप्ति के उपायों से भारत को शुद्ध शून्य उत्सर्जन के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायता मिलेगी।

भारत हाइड्रोजन संचालित ट्रेन आधुनिक शून्य–उत्सर्जन तकनीक भी अपना रही है। भारतीय रेल के लिए शुद्ध शून्य उत्सर्जन प्राप्त करने का लक्ष्य 2030 रखा गया है, किन्तु तेजी हो रहे विद्युतीकरण के कारण यह लक्ष्य 2025 में ही प्राप्त कर लेने की ओर अग्रसर है। इससे यह स्पष्ट है कि रेलवे विभाग देश के सतत आर्थिक विकास और पर्यावरण को लेकर प्रतिबद्ध ता की जिम्मेदारी को अत्यंत कुशलता के साथ निभा रहा है।

3. हाई–स्पीड रेल कॉरीडोर

देश के कई हिस्सों में हाई–स्पीड रेल कॉरिडोर का निर्माण किया जा रहा है, जिससे प्रमुख शहरों के बीच यात्रा का समय कम हो सके। इससे आर्थिक गतिविधियाँ भी तेज होंगी और पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा।

4. स्टेशनों का पुनर्विकास

रेलवे स्टेशनों को विश्वस्तरीय सुविधाओं से युक्त बनाने हेतु 'स्टेशन री–डेवलपमेंट प्रोजेक्ट' के अंतर्गत कई स्टेशनों को एयरपोर्ट जैसी सुविधाओं से लैस किया जा रहा है। इससे यात्रियों को उच्चस्तरीय अनुभव मिलेगा और रेलवे राजस्व में भी वृद्धि होगी।

5. डिजिटलाइजेशन

रेलवे में टिकट बुकिंग, खानपान, शिकायत निवारण, सूचना प्रणाली आदि में डिजिटल तकनीक का प्रयोग हो रहा है। इससे यात्रियों को पारदर्शिता, सुविधा और त्वरित सेवाएँ प्राप्त हो रही हैं। उदाहरण के लिए–आईआरसीटीसी (IRCTC) पोर्टल, मोबाइल एप्स और डिजिटल पेमेंट की सुविधाएँ विकसित की गई हैं।

6. आधुनिक रेल डिब्बों के निर्माण में आत्मनिर्भर

अब भारतीय रेल की देश दुनिया में पहचान देने में लालगंज, रायबरेली (उत्तर प्रदेश) स्थित आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना की अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका सिद्ध होने जा रही है। यहाँ आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना में वंदे भारत ट्रेन के डिब्बे बनाए जाने का काम तेजी से शुरू हो गया है। इस कारखाना में अंत्योदय, तेजस, दीनदयाल जैसे विश्वस्तरीय रेल डिब्बे बनाए जाने के साथ ही दक्षिण अफ्रीका के देश मोजाम्बीक के लिए भी ट्रेन का निर्माण किया जा चुका है।

7. रेलवे और 'मेक इन इंडिया'

भारतीय रेल ने 'मेक इन इंडिया' अभियान के तहत रेलवे इंजन, कोच, सिग्नलिंग उपकरण, रेलवे ट्रैक आदि के स्वदेशी उत्पादन पर बल दिया है। इसके लिए आधुनिक कोच और लोकोमोटिव का निर्माण मेक इन इंडिया के तहत देश के कई उत्पादन केंद्रों में हो रहा है। यह न केवल आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देता है, अपितु विदेशी मुद्रा की बचत और रोजगार सृजन में भी सहायक है।

चुनौतियाँ एवं समाधान

1. अधोसंरचना का पुराना ढाँचा

रेलवे ट्रैक और ब्रिज का एक बड़ा हिस्सा 50 साल से भी अधिक पुराना है, जिससे दुर्घटनाओं की संभावना बढ़ जाती है। इसका समाधान नई तकनीक का उपयोग, रिन्युएल और सेफ्टी प्रोटोकॉल के सख्त पालन से संभव है।

2.वित्तीय बोझ

भारतीय रेल की कम यात्री किराया नीति और सामाजिक दायित्वों के कारण घाटा भी एक चुनौती है। इसके लिए यात्रियों के किराए और माल भाड़े में संतुलन, सार्वजनिक–निजी भागीदारी (PPP) और व्यावसायिक दृष्टिकोण से प्रबंधन की आवश्यकता है। यात्रियों द्वारा बिना टिकट या उपयुक्त दर्जे का टिकट न लेकर यात्रा करना भी एक समस्या है। ऐसे अवांछित आचरण रोकने के लिए लोगों में सोशल मीडिया के माध्यम से जागरूकता लायी जानी चाहिए।

3.सुरक्षा एवं दुर्घटनाएँ

रेलवे में दुर्घटनाएँ अक्सर मानव त्रुटियों या तकनीकी कारणों से होती हैं। इसके लिए ट्रेन प्रोटेक्शन वार्निंग सिस्टम, कोलिजन अवॉइडेंस सिस्टम और मानव संसाधन के प्रशिक्षण पर बल देना जरूरी है। आजकल शरारती तत्वों द्वारा पटरियों को क्षति पहुँचाने, पटरियों पर पेड़ों के तने या पत्थर रखने जैसी घटनाएँ बढ़ गई हैं, इनके सुरक्षा हेतु नवीन तकनीकें खोजनी होंगी, जिससे जन–धन की होने वाली क्षति रोकी जा सके।

4. डीजल से होने वाले प्रदूषण से मुक्ति

डीजल इंजनों के प्रयोग से प्रदूषण बढ़ता है। विद्युतीकरण के साथ–साथ हरित ऊर्जा के प्रयोग से इस समस्या का समाधान किया जा सकता है

भारत सरकार द्वारा रेलवे में किए गए निवेश, प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल और पर्यावरण के प्रति जागरूकता से भारतीय रेल एक 'विकसित भारत' के सपने को साकार करने में अग्रणी भूमिका निभा रही है। आज यह न केवल यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाने का साधन है, अपितु यह आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में भी एक मजबूत स्तंभ बन चुका है। अस्तु, रेलवे के सतत विकास और आधुनिकीकरण के साथ, 'विकसित भारत' का सपना अब दूर नहीं रहा। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि भारतीय रेल देश की प्रगति के रास्ते पर अग्रसर है।

सविता वाणी (शिक्षिका)
गौरीगंज, अमेठी, उत्तर प्रदेश

खेला

जीवन के इस खेले में
एक अकेले के झमेले में
बस, यही रहा रंज
सीख सका न शतरंज।
किसी तरह सांप–सीढ़ी के
सांपों से बच कर निकला,
तो कैरम के स्ट्राइकर ने
गड्ढे में धकेला।
उम्र बीत गई अपना नंबर आने में,
लुढ़कता रहा लूडो के चारों खानों में।
जब हुआ चौपट सब चौपड़ में,

हाथ मलते ही रह गए अकेले में।
उछाला यूं हवाओं ने कुछ ऐसा,
स्मैश होता रहा शटल कॉर्क जैसा।
सोचा था कभी पकड़ेंगे बल्ला ऐसा,
पहली गेंद ने उखाड़ा विकेट, डूबा पैसा।
पड़ी जब वक्त के डंडे की मार,
गिल्ली की तरह गिरा जाकर बाज़ार।
जब चमकना चाह कंचों की तरह,
काले बंटे की मार पड़ी बेवजह।
जीतादृहारा, खूब खेल खेला,
लगा रहा जीवन भर यह मेला।
जिसे समझता था मैं अपना खेला,
रचा था नीली छतरी वाले ने
यह सारा झमेला।

हर्ष डी. सिंह
नियंत्रक, रेलवे बोर्ड

अपनों से मिलाती रेल

एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने का सिलसिला मानव सभ्यता के विकास के समय से ही लगातार चल रहा है। पहिए के आविष्कार से आने–जाने की गति में एकाएक तेज़ी आ गई और विभिन्न समुदाय, समाज और राष्ट्रों के बीच भौगोलिक दूरियां घटने लगीं तथा सांस्कृतिक व सामाजिक आत्मीयता बढ़ने लगी। अपने स्थान से दूसरे स्थानों तक जाना वास्तव में मनुष्य की प्रवृत्ति है जिसे यातायात के आधुनिक मशीनीकृत साधनों के प्रचलन के बाद मानो पंख लग गए।

मोटर, रेल, विमान, जलयान जैसे आधुनिक साधनों को अधिक गतिशील, आरामदेह तथा आकर्षक बनाने की दिशा में निरंतर प्रगति हो रही है। समय के साथ–साथ इनका प्रयोग करने वाले लोगों की संख्या विश्व भर में बड़ी तेज़ी से बढ़ रही है, लेकिन रेलगाड़ी जैसा रोमांच दूसरे यातायात के साधनों के साथ नहीं जुड़ा है। भारत जैसे देश में, जहां आबादी बहुत है और आर्थिक संपन्नता कम, सरकार की ओर से संचालित रेलवे हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक जीवन का अभिन्न अंग है। विमानों के उपयोग में हाल में देखी गई वृद्धि के बावजूद रेलवे में यात्रा करने वाले लोगों की संख्या कम नहीं हुई। कुंभ जैसा बड़ा आयोजन हो या खेल प्रतियोगिताएं या परीक्षाएं, हर अवसर पर आम लोगों को गंतव्य तक पहुंचाने का बोझ रेलवे ही संभालता है। सच तो यह है कि रेल यात्रा हमारी संस्कृति व स्मृति का हिस्सा बन गई है। देश के विभिन्न अंचलों में रेलों के बारे में लोकगीत और लोक कथाएं सुनी–सुनाई जाती हैं।

छह दशक से अधिक लम्बे मेरे जीवन में भी रेल यात्रा का प्रमुख स्थान रहा है। दैनिक यात्री के रूप में प्रतिदिन सुबह–शाम रेल यात्रा करने से लेकर दिल्ली से त्रिवेन्द्रम, मुम्बई, कोलकाता, बंगलौर, अहमदाबाद, सूरत, पटना, चित्रकूट और अजमेर तक की असंख्य लम्बी यात्राओं की स्मृतियां मन को रेलवे के साथ जोड़े रखती हैं। किन्तु गुजरात के व्यापारिक नगर सूरत की मेरी कुछ यात्राएं एकदम अविस्मरणीय हैं जो आज भी एक साथ खुशी, गम़ और रोमांच की अनुभूति कराती हैं।

1992 में बारहवीं की पढ़ाई पूरी करने के बाद मेरे बेटे मयूर को सूरत के गांधी पॉलीटेक्निक में टेक्सटाइल इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम में प्रवेश मिला । तीन –चार साल तक उसके सूरत प्रवास के दौरान 8–10 बार वहां आना–जाना हुआ, किन्तु इनमें से दो रेल यात्राएं ऐसी हैं जो इस कहावत को सही साबित करती हैं कि कभी–कभी यथार्थ कल्पना से अधिक अविश्वसनीय होता है। पहले 1994 की रोमांचपूर्ण रेल यात्रा का संस्मरण प्रस्तुत कर रहा हूँ, जिसे आज भी याद करके मन में प्रश्न उठता है कि यह सब कैसे हो गया। कुछ पाठकों को याद होगा कि 1994 में सूरत में भीषण प्लेग फैला था। उस समय सूरत को एक तरह से पूरे देश से काट दिया गया था ताकि वहां के लोगों का रोग देश के अन्य हिस्सों में न फैले। सूरत तक सारी रेल सेवाएं लगभग एक महीने तक स्थगित रहीं। इस दौरान केवल टेलीफोन के ज़रिए बेटे से सम्पर्क बना रहा। लगभग प्रतिदिन रात को फोन करके हम उसका हालचाल पूछते और आवश्यक हिदायतें देते थे। दिसम्बर के अंतिम सप्ताह में मैं, मेरी पत्नी और बेटी ने बेटे को मिलने के लिए सूरत जाने का कार्यक्रम बनाया। पश्चिम एक्सप्रेस में सेकेंड एसी की बुकिंग कराई। लेकिन हमारा नाम प्रतीक्षा सूची में था। उन दिनों मैं दूरदर्शन में समाचार संपादक के रूप में कार्यरत था। रेलवे में अपने संपर्कों से टिकट कंफर्म कराने का प्रयास किया। किंतु अंत तक वीआईपी कोटे से टिकट कंफर्म नहीं हुई, क्योंकि 24 दिसम्बर को ही संसद सत्र समाप्त हुआ था। रेलवे स्टेशन पर कोई व्यवस्था हो जाने की उम्मीद में हम समय से पहले अपने सामान के साथ नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर पहुंच गए। अंतिम क्षण तक मैं रेल अधिकारियों से हाथ–पैर जोड़कर सूरत जाने की अपनी विवशता बताते हुए किसी भी श्रेणी में स्थान देने का अनुनय–विनय करता रहा, किन्तु सब व्यर्थ। निर्धारित समय पर पश्चिम एक्सप्रेस प्लेटफार्म छोड़कर रेंगने लगी और हम कुछ दूरी पर खड़े हुए अपनी उम्मीदों का गुबार देखते रहे। थोड़ी दूर चलकर किसी कारण से रेलगाड़ी रुक गई। मेरी पत्नी ने कहा, हम ट्रेन में चढ़ जाते हैं, देखा जाएगा। मैंने उन्हें रेलवे के सूचना अधिकारी की हिदायत याद दिलाई कि टिकट कंफर्म न हो तो गाड़ी में मत बैठना, क्योंकि आजकल (उन दिनों) ऐसे यात्रियों को रास्ते में उतार दिया जाता है। अभी मेरी बात पूरी ही नहीं हुई थी कि मेरी पत्नी बेटी का हाथ पकड़कर भागती हुई सामने वाले कोच में चढ़ गई। तभी रेलगाड़ी फिर से रेंगने लगी। मेरे लिए सोचने का समय नहीं था और सूटकेस थामे मैं भी गाड़ी में सवार हो गया। इस बीच ट्रेन ने रफ्तार पकड़ ली।

हम तीनों गेट पर खड़े हुए इधर–उधर देख रहे थे कि अब क्या होगा। हमारे चेहरे की घबराहट देखकर कोच के पहले ही केबिन में बैठी एक महिला, जो किसी रेलवे अधिकारी की पत्नी थी, हमारी समस्या ताड़ गई। उसके पूछने पर जब मैंने सच्चाई बतायी तो उसने कहा कि मेरे पति मेरे साथ जाने वाले थे, लेकिन वे आवश्यक काम पड़ जाने के कारण नहीं आए, अतः एक बर्थ

आपको मिल सकती है। यह सुनकर हमारी सांस में सांस आई तो और लगा कि कम से कम बैठने की जगह तो मिल ही जाएगी। अभी सोने का समय नहीं हुआ था, इसलिए सामान लगाकर हम तीनों उसी केबिन में बैठ गए। वहां एक युवक का बैग था जो बहुत बातूनी था। किसी विषय में मैंने उसे किसी बात का जवाब दिया तो उसने पूछ लिया कि आप क्या करते हैं? जब मैंने उसे बताया कि मैं दूरदर्शन में समाचार संपादक हूँ तो वह बहुत खुश हुआ। उसने नाम पूछा तो उछल कर बोला सर, मैं तो आपका नाम दूरदर्शन पर पढ़ता हूँ। तभी उसने बताया कि मैं राजस्थान के एमपी मीणा जी के साथ जा रहा हूँ जो आधी रात को कोटा में उतरेंगे तो उनकी सीट खाली हो जाएगी। वह युवक तत्काल मुझे संसद सदस्य महोदय के पास ले गया और मेरा परिचय कराकर सारी स्थिति बता दी। एमपी साहब ने कंडक्टर को बुलाया और कहा कि उनकी बर्थ मुझे अलाट कर दें और कोई और बर्थ खाली होने पर इन्हें दे दें। इस तरह दो सीटें हमें मिल गईं। तब तक कंडक्टर पर मेरे पद का रौब पड़ चुका था और 12 बजे से पहले तीसरी बर्थ भी हमें मिल गई। इस प्रकार पत्नी के दुस्साहस के चलते हम आराम से रात को सोते हुए अगले दिन सूरत पहुंच गए और अपने बेटे से मिल सके। इस घटना का एक मानवीय पहलू यह है कि प्लेग के दौरान मेरे एक परिचित पत्रकार मेरे बेटे को होस्टल से अपने घर ले आए और उसे एक महीने तक अपने बेटे की तरह रखा। लगभग 20 साल बीत जाने पर भी उस गुजराती परिवार के साथ हमारे गहरे आत्मीय संबंध बने हुए हैं और आज तक सूरत में हमारा आना–जाना बना हुआ है।

दूसरा संस्मरण उससे अगले साल मानसून के मौसम का है। मैं बेटे से मिलने अकेला सूरत जा रहा था। तब भी पश्चिम एक्सप्रेस से जा रहा था। आर के पुरम से नई दिल्ली जाने के लिए निकला तो तेज़ बारिश शुरू हो गई। बड़ी मुश्किल से एक ऑटो वाला तैयार हुआ, लेकिन मोतीबाग की लालबत्ती से मुड़ने के बाद सड़क पर इतना पानी भर गया था कि स्कूटर चलना बन्द हो गया। थोड़ी देर बाद पीछे से 780 नम्बर डीटीसी बस आई। मैं उछल कर उसमें चढ़ गया। सड़कों पर पानी भरा होने के कारण बस बहुत धीमी चल रही थी। पार्लियामेंट स्ट्रीट से उसे रीगल की तरफ जाने की बजाय तालकटोरा रोड़ की ओर डाइवर्ट कर दिया गया। उधर गाड़ी छूटने का समय निकट आ रहा था और मेरा तनाव बढ़ने लगा। राम मनोहर लोहिया अस्पताल के राउंड अबाउट पर ट्रैफिक जाम था और बस वहीं ठिठक गई। कुछ देर प्रतीक्षा करने के बाद मैं वहीं उतर पड़ा और पैदल ट्रैफिक को लांघते हुए सबसे आगे पहुंच गया। वहां एक ऑटो वाले को नई दिल्ली स्टेशन चलने को कहा। लेकिन कनॉट प्लेस में जाम लगा हुआ था। ऑटो चींटी की चाल से आगे बढ़ रहा था। तब तक पांच बज गए और पश्चिम एक्सप्रेस के छूटने का समय निकल गया। मैंने सोचा कि स्टेशन तो जाना ही चाहिए क्योंकि गाड़ी लेट भी हो सकती है और यदि ट्रेन नहीं मिली तो टिकट तो रद्द कराना ही है। नई दिल्ली स्टेशन से (तब एक ही द्वार होता था) कुछ दूरी पर ट्रैफिक फिर जाम मिला। मैं ऑटो से वहीं उतर पड़ा और पैदल चलने लगा। मैं स्टेशन पर पहुंचा तो 5 बजकर 20 मिनट हो गए थे, लेकिन जब मैंने आगमन–प्रस्थान बोर्ड पर नज़र डाली तो खुशी से उछल पड़ा, पश्चिम एक्सप्रेस अभी अमृतसर से नई दिल्ली पहुंची ही नहीं थी क्योंकि समूचे उत्तर भारत में मूसलाधार वर्षा हो रही थी और बहुत–सी गाड़ियां लेट चल रही थी। मैं तुरन्त निर्धारित प्लेटफार्म पर पहुंचा और 10 मिनट में ही वर्षा जल में सद्यःस्नाता पश्चिम एक्सप्रेस प्लेटफार्म पर आ लगी। पौने छह बजे के आस–पास ट्रेन अपने गंतव्य की ओर चल दी। मैं समझ नहीं पा रहा था कि संभव–असंभव के इस खेल में संभावना की विजय के लिए मैं किस के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करूं। आखिर यह रेल ही थी, जिसने दोनों बार विपरीत परिस्थितियों में भी आत्मीयों से मिलाने का काम किया।

सुभाष सेतिया
द्वारका, नई दिल्ली

जीवन का सार

संघर्षों में जीवन बीता, राह कठिन पर बढ़े चले।
हार नहीं मानी जीवन में, चुनौतियों पर विजय मिले।
जब–जब विपत्ति आई जीवन में भीतर से साहस काम आया
बाहर से मित्रों–रिश्तों का साथ भी तो मन भाया
ईश्वर के आशीष और भीतर–बाहर के साहस से हम जीवन का युद्ध जीत चले
हार नहीं मानी जीवन में, चुनौतियों पर विजय मिले।
यही जीवन का सार है कि चाहे संसार में दुःख अपार है,
किन्तु दुखों के बाद ही जीवन में सुख के भी आसार हैं।
तो निराश मत होना जीवन में, आस की किरण रखना जगाए।
इस आशा की किरण से ही तो जीवन में सफलता पाएं।
तो याद रहे अपने साहस को मत कभी मरने देना
भीतर–बाहर मन के अंदर आस का दीपक जलाए रखना
देखना, एक दिन तुम सब चुनौतियों पर विजय पाओगे
और विश्व में ध्रुव–तारा बन कर टिमटिमाओगे।
अगर साहस नहीं रखा जीवन में तो,
हीरा जन्म गँवाओगे, हाथ मलते रह जाओगे,
इहलोक और परलोक में कुछ भी न पाओगे।
अच्छा है जीवन में संघर्षों से प्यार करो,
उठो, लड़ो जीवन में कठिनाइयों को पार करो,
एक दिन अपने धैर्य और साहस का फल पाओगे,
जीत मिलेगी जीवन में और सफल व्यक्ति कहलाओगे,
सफल व्यक्ति कहलाओगे।

अंजली शर्मा
वरिष्ठ अनुवादक, मंडल कार्यालय, फिरोजपुर

सतरंगी इंद्रधनुष

बच्चों! भीषण गर्मी के बाद अब बरसात का मौसम आता है। चारों तरफ हरियाली दिखती है। आसमान में बादल उमड़–घुमड़ कर शोर मचाते हैं। क्या आपने कभी कभी बारिश के बाद आसमान में एक अनोखा सुहावना दृश्य देखा है। इस दृश्य में आसमान में अर्द्धवृत्ताकार के रूप में एक सतरंगी आकृति दिखाई देती है। क्या इस आकृति को पहचानते हो? आपने बिल्कुल सही पहचाना, इस सतरंगी आकृति को 'इंद्रधनुष' कहते हैं।

बच्चों! आज इस आलेख के माध्यम से आसमान में उभरी सतरंगी आकृति को जानेंगे। यह कब दिखाई देता है?, कैसे बनता है? क्यों बनता है? और सतरंगी आकृति में कितने रंग होते हैं? सभी प्रश्नों के उत्तर के लिए हमें विज्ञान के प्रकाश नामक पाठ का अध्ययन करना होगा। यह आकृति तब दिखाई देती है जब वर्षा के बाद धूप निकलती है, जब वातावरण में उपस्थित वर्षा की बूंदें सूर्य के प्रकाश से टकराती हैं तो ये बूंदें एक प्रिज्म की तरह कार्य करती हैं। अतः इसे समझने के लिए सर्वप्रथम प्रिज्म की क्रियाविधि को समझेंगे।

प्रिज्म की यह विशेषता होती है कि जब श्वेत प्रकाश को प्रिज्म से गुजारते हैं तो यह प्रकाश सात अलग अलग रंगों की पट्टिकाओं (बैंगनी, आसमानी, नीला, हरा, पीला, नारंगी और लाल) रंगों में विभक्त हो जाता है। यह घटना वर्णविक्षेपण कहलाती है और सात रंगों के इस क्रम को वर्ण क्रम कहते हैं। इसमें रंगों का क्रम निश्चित होता है। अंग्रेजी में हम इसे VIBGYOR के नाम से जानते हैं। जिसका अर्थ है–

V - Violet– बैंगनी	Y - Yellow– पीला
I- Indigo– आसमानी	O - Orange– नारंगी
B - Blue– नीला	R - Red– लाल
G - Green– हरा	

वर्षा के बाद वर्षा की हल्की बूंदे पृथ्वी में न गिरकर आसमान में ही रह जातीं हैं जब सामने सूर्य का प्रकाश इन बूंदों पर पड़ता है तो ये बूंदे एक प्राकृतिक प्रिज्म का कार्य करती हैं और सूर्य का प्रकाश इन बूंदों से टकराकर सात रंगों (बैगनी, आसमानी, नीला, हरा, पीला, नारंगी और लाल की पट्टिकाओं में विभक्त हो जाता है और हमें मनुहारी 'इंद्रधनुष' दिखाई देता है। इस कारण इंद्रधनुष को प्राकृतिक प्रिज्म कहा जाता है।

इंद्रधनुष की घटना प्रकाश के अपवर्तन, पूर्ण आन्तरिक परावर्तन और वर्ण विक्षेपण पर आधारित है। इंद्रधनुष सदैव सूर्य की विपरीत दिशा में ही दिखाई देता है। कभी कभी लगातार दो इंद्रधनुष एक साथ दिखाई देते हैं। यह तब सम्भव होता है जब एक इंद्रधनुष बनने के बाद निकली हुई रंगीन रोशनी श्वेत प्रकाश में परिवर्तित हो जाती है और यह श्वेत प्रकाश वातावरण में उपस्थित पानी की बूंदों से टकराता है। लेकिन इस प्रकार के इंद्रधनुष में रंगों का क्रम ठीक उल्टा हो जाता है। पानी के फव्वारों, झरनों में भी इंद्रधनुष देखा जा सकता है।

जब फव्वारों, झरनों के ऊपर पानी की छोटी छोटी बूंदें भाप/वाष्प के रूप में आती हैं तो सूर्य का प्रकाश इन बूंदों से टकराकर इंद्रधनुष का निर्माण करती हैं। बच्चों! इंद्रधनुष गोल होता है। परंतु जमीन से हमें इंद्रधनुष अर्धवृत्ताकार के रूप में ही दिखाई देता है अगर ऊँचे उड़ते हुए हवाई जहाज से इसे देखते हैं तो हमें पूरा गोल ही दिखाई देता है। तो अब आप इंद्रधनुष के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त कर चुके हैं तो आज ही आर्ट पेपर में इंद्रधनुष बनाओगे और क्रिया विधि को अपने दोस्तों को समझाओगे।

डॉ. कमलेन्द्र कुमार
जालौन, उत्तर प्रदेश

दिन कुछ ऐसे गुज़ारता है कोई

''तुम फिर खयालों की दुनिया में विचरण कर रही हो न?''

''क्यों ख़यालों की दुनिया में विचरण करने पर पाबंदी है क्या?''

''बेवजह की बहस मुझे पसंद नहीं।''

''ओह! तो क्या पसंद है तुम्हें ?''

''बकवास बन्द समझी।''

''किसने शुरू की?''

''चुप रहोगी?''

कहकर प्रभात जल्दी से ऑफ़िस के लिए तैयार होने लगा। बालकनी में बरसते बादलों को देख प्रकृति के सौंदर्य पर मुग्ध होती नीरा एकाएक प्रभात के चिड़चिड़ाते रूप को देख खिन्न हो गई। पहले तो उसे क्रोध आता था पति के इस स्वभाव से, पर अब आदत हो गई। विवाह के इतने बरसों तक झेलते–झेलते वह अब ज्यादा परवाह नहीं करती। फटाफट टेबल पर नाश्ता लगाकर रसोई के बिखरे काम समेटने लगी... कुछ पल पहले की खिटपिट को भूल चाय के लिए पानी चढ़ा दिया और गुनगुनाने लगी ''कहां से आये बदरा...'' सुरीले कण्ठों से रसोईघर गूंज उठा। खिड़की के बाहर झर–झर पड़ती पावस की बूंदों में सुर बहने लगे। मसाले कूटने की खटखट नालों से कूदती जल धारा, अदरक इलायची की महक को महसूस करती हुई नीरा चाय के साथ डायनिंग टेबल पर पहुँची। कप को थामते हुए प्रभात अख़बार में ही नज़रें गड़ाए रहा। बरसात के शोर के बीच दो जनों की चुप्पी में भी एक खामोश सा शोर दबा हुआ वातावरण को बोझिल बना रहा था। कोई शब्द नहीं...घर के हर कोने में एक अजीब सी सुस्ती पसर गई। नीरा को यह समय बहुत भारी लग रहा था। कार्तिक के स्कूल जाने के बाद ही घर में सन्नाटा पसर जाता है। प्रभात को तो बस ऑफ़िस, समय पर भोजन, न्यूज़ और फिर लैपटॉप पर ऑफ़िस का काम करने के अतिरिक्त किसी से कोई मतलब नहीं।

''मैं चलता हूं।''

नीरा ने आंखे भरकर प्यार से प्रभात को देखा, पर प्रभात अनजान सा गाड़ी की चाबी और ऑफ़िस बैग लेकर दरवाज़े से बाहर निकल खटाखट सीढ़ियाँ उतर गया। दरवाज़ा बन्द कर वह जाते पति को बॉल्कनी से देखती रही। जब तक गाड़ी आंखों से ओझल न हो वह रोज़ाना देखती है। कॉलोनी की सड़क पर छाते लिए लोग आ जा रहे थे। उड़ने को बेताब पंछी दरख्तों पर भीगे परों को संभाले दुबके हुए बरसात के रुकने की बाट जोह रहे थे।

नीरा देर तक गुमसुम सी फुहारों को देखती रही और मन बारिश

में भीगने लगा। शिफॉन की साड़ी में लिपटी हिंदी फिल्मों की वे तमाम नायिकाएं आंखों के आगे नर्तन करने लगी। कल्पनाओं ने पंख खोल लिए। दूर–दूर तक फैली घास के विस्तृत दालान में वह शिफॉन की गुलाबी साड़ी में लिपटी प्रभात का हाथ पकड़े ''मेघा रे मेघा रे मत परदेस जा रे...आज तू प्रेम का सन्देस बरसा रे'' गा रही है। दोनों भीग रहे हैं...बूंदों के संगीत के साथ गर्म सांसों और धड़कनों के संगीत को सुनती वह भीगे ही जा रही है कि प्रभात ने उसे बांहों में भर लिया। बिजली की गड़गड़ाहट के साथ ही कल्पनाओं के पंख उतर गए और वह धरातल पर आ गई। अभी–अभी तो उसका हीरो दफ़्तर गया है, कड़वाहटों की बरसात करते हुए। बेड पर बिखरे तौलिए और कपड़ों को व्यवस्थित करते हुए बिखरे मन को भी व्यवस्थित करने लगी। फूलमती आती ही होगी, आते ही झाड़ू–पौंछा और बर्तनों का संगीत शुरू हो जाएगा। ओह... असली ज़िन्दगी कितनी नीरस है, पर फिल्मों में कितना रोमांस होता है। नीरा के आगे कॉलेज के दिनों की हीरोइनें सजीव होकर प्रकट होने लगीं। वह और उसकी सखियाँ निम्मी और शीलू फिल्मों की कितनी दीवानी थीं. ..कितनी ही फिल्मों के डायलॉग, गाने और कहानियां कण्ठस्थ थीं। दिन–रात किसी न किसी हिरोइन के अवतार में ही रह सपनों की दुनिया सजाना मानो शगल हो गया। लायब्रेरी में भी जाते तो प्रेम कहानियां ही पढ़ते, सुधा और चंदर को पढ़कर रोते। अमिताभ बच्चन और रेखा के प्रेम का जादू दिलो दिमाग पर छाया रहता। डोरबेल बजते ही उसने गहरी सांस ली और दरवाजा खोलने चली गई।

फूलमती कई सालों से उसके घर काम कर रही है, दस सालों

में दो बार ब्याह कर लिया। पहला तो बहन का देवर ही था, पर दारू पीकर पीटता था तो दोनों बच्चों को साथ लिया और छोड़ दिया घर। अब एक अमीर साहब के ड्राइवर से ब्याह कर लिया। वह साहब के लिए खाना बनाती थी और भरत साहब की गाड़ी चलाता था, दोनो में प्रेम हुआ और शादी कर ली। नीरा ने सबसे पहले फूलमती को यही पूछा 'तुम पिक्चर देखे हो साथ मे?'

फूलमती एकाएक लाजवंती बन बोली 'होउ देखे हैं ना मीनाक्षी सिन्हा की फिलिम।'

'अरे सोनाक्षी सिन्हा है वह'

'हमें का पतो' और शरमा कर रसोई में चली गई। नीरा को फूलमती से ईर्ष्या हो आयी...दो बच्चों की मां एकदम नई दुल्हन सी शरमा रही है। दो बच्चे, दूसरा ब्याह फिर भी जीवन में नमक है, चलो यह तो सुखी है। मध्यमवर्गीय परिवारों की ही विडम्बना है कि घर–परिवार से ऊपर नहीं सोच सकती स्त्री। वह तो परिवार के दबाव में प्रतियोगिता परीक्षा के लिए भी तैयारी नहीं कर सकी। ब्याहते ही पोते का मुख देखने की सास–ससुर की इच्छा को पूरा करने में वह मानसिक रूप से कमज़ोर हो गई। बहुत मन्नतों और इलाज के बाद पोता हुआ तो नौकरी का तो सवाल ही नहीं उठता था। इन सबके बीच उसकी ख्वाहिशें कहीं दफ़न होकर रह गईं। लड़ने की क्षमता तो बचपन से ही नहीं थी। तब भी कल्पनाओं के संसार में विचरना ही प्रिय था तो बहनों और भाइयों से कभी लड़ाई नहीं की, जबकि सब बड़े भाई–बहन खेलते समय लड़ते रहते थे, कभी गाजर के हलवे को लेकर, कभी सर्दियों के गोंद के लड्डू को लेकर...राशनिंग से मिली खाने की चीजों को भी एक–दूसरे की नज़र बचाकर पार कर लिया करते थे। बड़े भैया और छोटी बहनें पर वह शांत स्वभाव की ही थी अपने में मस्त। कभी–कभी गुस्सा आता पर हवाई फ़ायर तक ही सीमित रहा, जबकि भैया और छोटी बहन बुलबुल तो लड़ाई में खूब गुत्थमगुत्था हो जाते थे। बस वह झगड़े से दूर कुछ देर कुढ़ती, फिर कल्पनाओं में खो जाती। निम्मी और शीलू के घर घण्टों छत पर सिर जोड़कर रोमांटिक जोड़ों की बातें करती। शीलू की बहन ममता के ब्याह का एलबम आज भी याद है, कितने दिनों तक वह स्कूल में एलबम लिए घूमती रही, पर दिखाया सिर्फ खास सहेलियों को ही। हनीमून की तस्वीरें देख क्लास की लड़कियां शरमा रही थीं यहां तक कि 'हनीमून' शब्द को बोलकर ही रोमांच हो रहा था। फूलों की वादियों में जीजा की बाहों में लिपटी जीजी बिल्कुल सिलसिला की रेखा लग रही थी। होटल के कमरे में गुलाबी नाइटी में तरह–तरह के पोज़ देती जीजी की खूब सारी तस्वीरें तीनों सहेलियों ने कितनी ही बार देखीं। नीरा ने तभी एक ख्वाब मन में पाल लिया...गुलाबी नाइटी, फूलों की वादियां और सिलसिला के अमिताभ, रेखा जैसी तस्वीर अपने हीरो के साथ वह ज़रूर खिंचवाएगी। यूँ हीरो की तलाश तो उसकी झील सी आंखें करती ही रहती थीं...मोहल्ले में सत्यभामा चाची के ऊपर वाले कमरे में तब एक धीर–गम्भीर युवा रहता था, जो चाची के पीहर से था और पढ़ने के लिए आया हुआ था। पीहर में संयुक्त परिवार और भाइयों में सम्पत्ति को लेकर छिड़े गृहयुद्ध से परेशान युवक को बुआ सत्यभामा अपने घर ले आयी। लड़का रौबीला जवान था और नीरा सहित मोहल्ले की लड़कियों की आंखें उसके दर्शन को तरसती रहती थीं। वह था कि बाहर कम निकलता, पर उसके कमरे की बत्ती जलती देख ही मन तृप्त हो उठता। नीरा तो उसकी दर्शनाभिलाषी थी ही, पर उसने देखा बुलबुल भी अक्सर उसकी बातें करती थी। नीरा को चिढ़ मचती, उसे लगता था कि लड़का मन ही मन नीरा को चाहता है। वह देर रात खटिया पर पड़े–पड़े ख्वाब बुनती...लड़के के साथ बारिश में भीगती, बर्फीले तूफ़ान में टिन की छत वाली दुकान में रात को शरण लेके चाय सुड़कते हुए, पटरियों पर हाथ पकड़ दौड़ते हुए, सिनेमा जाते हुए, शरमाते, इतराते न जाने कितने हसीन लम्हें जगती आंखों के स्वप्न होते। प्रेम में डूबी वह एक बार चाची के घर गई तो बातों–बातों में लड़के के बारे में पूछा तो पता चला लड़का वापस इंदौर गया, उसकी मां उसके बिना नहीं रह सकती। नीरा का दिल टुकड़े–टुकड़े होकर बिखर गया...यूँ एक अनकही प्रेम कहानी का अंत हो गया। जीजी की शादी हुई तो जीजी के देवर को देख मन पुलकित हुआ और लगा यही अपना हीरो है कुछ नैन मटक्के, इम्प्रेशन डालने के काम हुए, कुछ बहकी बातें, मजाकें हुईं। जीजी जब भी आती तो जनाब साथ ही आते फिर झील सी आंखों में सपने तैरते, जीजी के देवर भी पूरे दिल फेंक...सबकी नजरें बचाकर कभी पानी का गिलास थामते हुए स्पर्श करते, कभी कोई शायरी सुनते। पर इस प्रेमी जोड़े पर जीजी की नज़र पड़ गई, तुरन्त कान उमेठ कर बोली ''ख़बरदार कभी देवरजी से नयन लड़ाए तो, मेरी सास मुझे कच्चा चबा जाएगी, तुझे पता है उन्हें बर्फ सी सफेद बहू चाहिए।''

चट से फिर ख्वाब टूटा...मुआ सांवला रंग ही बैरी हो गया। सब भाई–बहन गौर वर्ण, पर नीरा अकेली अपनी दादी पर गई। एक कहानी का फिर अंत हुआ...अनकही पीर फिर हृदय में दब गई।

फिर एक दिन आया, प्रभात के साथ शादी हुई और इसके बाद से ही जीवन बदल गया। छोटे से कस्बे से महानगर आकर रहना यूँ तो उसकी कल्पनाओं वाली दुनिया में रंग भरने जैसा था, पर यहां आकर पता चला जीवन अलग होता है। प्रभात बहुत गम्भीर रहता है, यूँ वह भी वाचाल या बहिर्मुखी नहीं, पर अपने साथी को लेकर कुछ कल्पनाएं थीं उसके मन में। जब शादी के बाद घूमने गए तो उसे पूरी तरह मदहोशी ने घेर रखा था कि अब खूब रोमांस होगा, फिल्मों जैसे पोज़ में तस्वीरें होंगी और फिर वह सखियों को एलबम दिखाएगी पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। बन्दा अपने हाथ समेटे पास खड़ा तस्वीर खिंचवा रहा। फोटोग्राफर ने कहा भाईसाहब ज़रा मैडम के कंधे पर प्यार से हाथ रखकर आंखों में आंखें डालते हुए पोज़ दें।

प्रभात ने घूरते हुए उसे ऐसे देखा कि वह डर गया और दो टूक बोल दिया 'अपने काम से काम रखो समझे?'

उस बेचारे की हवा तो निकली ही नीरा भी डर गई। हो गया

हनीमून भी और ज़िंदगी घर–गृहस्थी में कटती रही, पर एक चीज़ नहीं बदली वह है उसके ख्वाब...ख्वाबों को जिंदा रखने की हिम्मत और प्रभात से मिले इतने तिरस्कारों के बाद भी उम्मीद रखना।

कॉलोनी के रवीश और अंजना को हाथ में हाथ डाले आते–जाते देखने से अब उसे ईर्ष्या नहीं होती, प्यार ही आता है। व्हाट्सएप स्टेटस और इंस्टा स्टोरी पर उनकी आलिंगनबद्ध तस्वीरें जादू सृजित करती है, वे साथ–साथ शॉपिंग करने जाते हैं, रेस्टोरेंट जाते हैं, सिनेमा जाते हैं, म्यूज़िक कन्सर्ट में जाते हैं।

नीरा भी अपने हीरो प्रभात के साथ मॉल, रेस्टोरेंट जाती है डेट पर जाने जैसी फीलिंग के साथ, पर सेल्फी खुद की ही लेती है, प्रभात की तरफ कैमरा घूमते ही उसकी त्यौरियां चढ़ जाती हैं, धीरे से कहेगा 'यार तुम पागल हो?'

''हां तुम्हारे प्यार में पागल।''

''फिर ख्वाबों में...इलाज करवाओ नीरा।''

''तुम्हीं तो डॉक्टर हो मेरे''

''बकवास बन्द करो वरना मैं चला जाऊँगा।''

बस इस वार्तालाप के बाद दोनों में अबोला हो जाता है, तब कार्तिक को सम्बोधित करते हुए ही संवाद होते हैं और फिर चार–पांच दिन वह प्रतीक्षा करती है हीरो मनाएगा...कुछ मस्का लगाएगा और हीरो?... बन्द मुट्ठी की तरह।

वह जानती है प्रभात को पता है कि नीरा को क्या चाहिए पर उसे यह सब कृत्रिम लगता है, बोझ लगता है, उसके व्यक्तित्व से मेल नहीं खाता, पर विवाह के इतने साल बाद भी नीरा ने हिम्मत नहीं हारी। वह कविताएं लिखती रही, डायरी लिखती रही पर रही अपनी कल्पनाओं की दुनिया में।

सर्दियों के आगमन पर एक हल्की सी खुमारी मौसम पर तारी हो जाती है। पतले कम्बल और गहरे रंगों की चादरें निकाल कर नीरा ने सर्दियों के स्वागत की तैयारी कर ली। शाम को प्रभात के आते ही गर्म कचौरी और थर्मस में चाय रख दी।

''तुम नहीं पिओगी चाय?''

''मन नहीं।''

''तबियत तो ठीक है?''

''पता नही।''

''मतलब?''

''कुछ नहीं।''

''कार्तिक कहां है?''

''क्षितिज के घर।''

कुछ देर फिर चुप्पी, फिर टीवी चैनल पर न्यूज़ फिर लेपटॉप पर काम। 'देर से गूंजते हैं सन्नाटे...जैसे हमको पुकारता है कोई' ग़ज़ल की गुनगुनाहट के साथ रसोई में दाल–भात भी पक गए। रात होते–होते प्याज भूनने से उठी महक, चकला–बेलन की खटखट, बर्तनों की टनटनाहट, खिड़की से बाहर पेड़ों की पत्तियों पर पसरी पीली रोशनी की गर्माहट, भोजन के बाद टहलते लोगों के झुंड, ये सब कुछ दिनचर्या में शामिल हैं और जो पूरे न हों वे सपने देखना भी...!

अधूरे सपनों में भी रस होता है, पूरे हो जाएं तो फिर क्या ही आनन्द। इस रिक्ति में न जाने कितने रंग वह भर सकती है... नीरा का यही तो जीवन है, कोई शिकायत भी नहीं जीवन से, पति से...किसी से भी नहीं।

प्रो. (डॉ.) मंजु शर्मा
प्राचार्य– राजकीय लोहिया कॉलेज, चूरू (राजस्थान)

रचनाएँ भेजने हेतु निवेदन

- आपकी उत्कृष्ट रचनाओं का 'रेल राजभाषा' में स्वागत है।
- अपनी रचनाओं की मूल प्रति ही भेजें। लेख/कविता आदि के साथ एक घोषणा पत्र भी संलग्न करें, जिसमें यह स्पष्ट किया गया हो कि शीर्षक से शुरू होने वाला लेख/कहानी/कविता आदि मौलिक एवं अप्रकाशित है तथा इसमें दी गई सामग्री एवं फोटो की जिम्मेदारी लेखक की है। लेख/कहानी/कविता आदि से संबंधित फोटो सामग्री के साथ भेजें। रचनाएं यूनिकोड फॉर्मेट/मंगल में टाइप कराकर वर्ड फाइल के रूप में ही भेजें।
- पत्रिका को और बेहतर बनाने के लिए लेखकों और पाठकों के पत्रों एवं सुझावों का स्वागत है।
- लेखकों से अनुरोध है कि अपना नाम, पता, मोबाईल नं., ई–मेल आईडी, बैंक खाता विवरण और चेक की एक फोटोकॉपी अपनी टाइप की हुई रचना के साथ हमारे ई–मेल patrikahindi@gmail.com पर भेजें।

–संपादक, रेल राजभाषा

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा रेल कार्यालयों के निरीक्षण की झलकियां

रेलवे बोर्ड

रेलवे बोर्ड राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 155 वीं बैठक

सदस्य (परिचालन एवं व्यवसाय विकास), रेलवे बोर्ड की अध्यक्षता में दिनांक 17 जून, 2025 को रेल भवन में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 155वीं बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सदस्य (परिचालन एवं व्यवसाय विकास), रेलवे बोर्ड ने राजभाषा पत्रिका 'रेल राजभाषा' के 141वें अंक का विमोचन किया। बैठक की झलकियां प्रस्तुत हैं :

कमलापति त्रिपाठी राजभाषा स्वर्ण पदक एवं रजत पदक पुरस्कार-2023 वितरण समारोह की झलकियां

कमलापति त्रिपाठी राजभाषा स्वर्ण पदक एवं रजत पदक पुरस्कार-2023 वितरण समारोह की झलकियां

कमलापति त्रिपाठी राजभाषा स्वर्ण पदक एवं रजत पदक पुरस्कार-2023 वितरण समारोह की झलकियां

कवि एवं कथाकार नागार्जुन तथा माखनलाल चतुर्वेदी की जयंती समारोह की झलकियां

दिनांक 13 जून, 2025 को रेल भवन के सम्मेलन कक्ष में हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कवि एवं लेखक माखनलाल चतुर्वेदी तथा हिंदी जगत के प्रसिद्ध कवि एवं कथाकार नागार्जुन की संयुक्त जयंती मनाई गई। इस अवसर पर इनकी रचनाओं पर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम की झलकियां प्रस्तुत हैं :–

क्षेत्रीय रेल प्रशिक्षण संस्थान, भुसावल में अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव-2024 के आयोजन की झलकियां

राजभाषा हिंदी के प्रयोग–प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) के तत्वावधान में अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव–2024 का आयोजन, नाटकों का मंचन क्षेत्रीय रेल प्रशिक्षण संस्थान, भुसावल के सभागार में दिनांक 2 से 6 जून, 2025 तक किया गया। इस नाट्योत्सव में विभिन्न क्षेत्रीय रेलों, उत्पादन इकाइयों आदि से कुल 17 नाट्यदलों ने भाग लिया। नाटकों के मंचन का शुभारंभ क्षेत्रीय रेल प्रशिक्षण संस्थान, भुसावल के प्राचार्य डॉ. आर.एन. मीणा, निदेशक (राजभाषा) रेलवे बोर्ड डॉ. वी. सुगुणा और निर्णायकगण द्वारा माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया। इस अवसर पर, क्षेत्रीय रेल प्रशिक्षण संस्थान, भुसावल के अधिकारीगण भी मौजूद थे।

राजभाषा निदेशालय द्वारा रेलवे बोर्ड में आयोजित पुस्तक चर्चा कार्यक्रम की झलकियां

रेलवे बोर्ड में दिनांक 20 अगस्त, 2025 को आयोजित 'कंठस्थ 2.0' पर कार्यशाला की कुछ झलकियां

कानपुर : स्वाद, संस्कृति और संघर्ष का शहर

कानपुर... एक ऐसा नाम, जो सिर्फ एक शहर नहीं, बल्कि इतिहास, परंपरा, संघर्ष, स्वाद और ऊर्जा से भरा पूरा एक अनुभव है। गंगा नदी के तट पर बसे इस शहर को अगर एक वाक्य में समेटा जाए तो यही कहा जा सकता है– यह शहर चलता नहीं, बल्कि दौड़ता है– अपने अतीत को सीने से लगाकर और भविष्य की ओर बढ़ते हुए।

इतिहास की गलियों से.....

कानपुर का नाम आते ही सबसे पहले याद आता है वर्ष 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, जहाँ नाना साहेब पेशवा, तात्या टोपे और अजीमुल्ला खां जैसे वीरों ने ब्रिटिश सत्ता की नींव हिला दी थी। बिठूर, जो कानपुर के समीप स्थित है, रानी लक्ष्मीबाई का मायका था और यह वही धरती है जहाँ से उनकी बहादुरी की गाथा शुरू हुई। नाना राव पार्क, मैसकर घाट और पुरानी कोठियाँ आज भी गवाह हैं उस स्वर्णिम और रक्तरंजित इतिहास की, जो कानपुर को सिर्फ एक औद्योगिक नगरी नहीं बल्कि एक क्रांतिकारी धरती बनाते हैं।

'मैनचेस्टर ऑफ ईस्ट' की पहचान

ब्रिटिश काल में कानपुर भारत का सबसे बड़ा औद्योगिक केंद्र था। एल्गिन मिल्स, विक्टोरिया मिल्स और चमड़े की तमाम फैक्ट्रियाँ इस शहर को 'मैनचेस्टर ऑफ द ईस्ट' की उपाधि दिलाती थीं। आज भी जाजमऊ क्षेत्र में स्थित लेदर टेनरीज़ भारत में बने चमड़े के सबसे बड़े उत्पादक केंद्रों में से हैं।

लेकिन आज का कानपुर केवल मिलों और कारखानों का शहर नहीं है– यह आधुनिक भारत का हिस्सा है, जहाँ शिक्षा, तकनीक और स्टार्टअप संस्कृति तेजी से उभर रही है। आईआईटी कानपुर, हरकोर्ट बटलर तकनीकी विश्वविद्यालय

और चंद्रशेखर आज़ाद कृषि विश्वविद्यालय जैसे संस्थान इस शहर को शिक्षाविदों का गढ़ बनाते हैं।

ज़ायकों का ज़खीरा–कानपुर का भोजन

कानपुर का नाम लेते ही ज़ुबान पर आ जाता है– ठग्गू के लड्डू। इनका स्वाद जितना निराला है, उतना ही मज़ेदार है इनकी टैगलाइन– 'ऐसा कोई सगा नहीं, जिसे हमने ठगा नहीं!'। यह दुकान दशकों से कानपुर की शान बनी हुई है और हर बाहरी मेहमान यहाँ के लड्डुओं का दीवाना हो जाता है।

लेकिन बात यहीं खत्म नहीं होती। चलिए, एक स्वाद यात्रा पर निकलते हैं :

- **बदनाम कुल्फी** : नाम बदनाम, स्वाद लाजवाब! ठंडक और मिठास का ऐसा मेल, जो एक बार खा लिया तो भूल नहीं सकते।
- **बिरहाना रोड की कचौरी–सब्जी और जलेबी** : यहाँ की खस्ता कचौड़ी और गरमागरम जलेबी का नाश्ता हर कानपुरिया की सुबह की पहचान है।
- **परंपरागत मिष्ठान भंडार** : रसगुल्ले, गुलाब जामुन और मलाई! यहाँ की मिठाइयाँ कानपुर के उत्सवों की आत्मा हैं।
- **कनक स्वीट्स की मलाई**– गिलौरी और पंडित की लस्सी – इनके बिना कानपुर यात्रा अधूरी मानी जाती है।
- **चाट गलियाँ** : घंटाघर से लेकर नयागंज तक, आलू टिक्की, दही भल्ला, पानी पूरी और टमाटर चाट – हर नुक्कड़ पर स्वाद का धमाका।

कानपुर की खासियत यह है कि यहाँ के खाने में शुद्ध देसीपन है – न ज़रूरत फैंसी नामों की, न प्लास्टिक की सजावट की – सीधा दिल से बना, सीधा दिल को छू जाने वाला।

बाजारों का मेला–जहाँ भीड़ नहीं, जीवन है

कानपुर का हर बाजार अपनी अलग पहचान और विशेषता लिए हुए है :

- **बिरहाना रोड**– यहाँ आपको इलेक्ट्रॉनिक्स से लेकर फैशन तक सब मिलेगा, लेकिन असली मज़ा यहाँ के रोडसाइड फूड स्टॉल्स में है।
- **नवीन मार्केट**– कानपुर का दिल। यहाँ का फुटवियर, रेडीमेड कपड़े और शादी की शॉपिंग का जलवा देखते ही बनता है।
- **अर्श महल और फूलबाग**– पारंपरिक कपड़ों और साड़ी की खरीदारी के लिए बेस्ट।
- **नयागंज**– कानपुर का थोक बाजार, जहाँ मसाले, सूखे मेवे, किराना और मिठाइयों की दुकानें 100 साल पुरानी कहानियाँ सुनाती हैं।
- **Z Square Mall**– आधुनिक कानपुर का आइना, जहाँ ब्रांडेड स्टोर, मल्टीप्लेक्स और कैफे युवाओं का अड्डा बन गए हैं।

इन बाजारों में घूमना केवल शॉपिंग नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक अनुभव होता है। दुकानों के बाहर लटके रंग–बिरंगे कपड़े, कहीं चाय की केतली से उठती भाप और कहीं हॉकर्स की तेज़ आवाज़ें– सब मिलकर कानपुर को एक जीवंत कैनवस बना देती हैं।

कानपुर आज और कल

आज का कानपुर बदलाव के दौर से गुजर रहा है। कानपुर मेट्रो, स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट्स, नए हाईवे, आधुनिक मेडिकल कॉलेज और टेक्नोलॉजी पार्क इस शहर को नए युग की तरफ ले जा रहे हैं। लेकिन ये बदलाव इसकी आत्मा को नहीं मिटा पाए– आज भी कानपुर वही अपनापन लिए खड़ा है, जहाँ हर बाहरी व्यक्ति कुछ ही समय में अपना बन जाता है।

अंत में.....

कानपुर को एक शब्द में बाँधना असंभव है। यह एक अनुभव है, एक किस्सा है, एक आंदोलन है, एक स्वाद है और सबसे बढ़कर– यह एक भावना है। यह शहर आपको सिर्फ अपनी गलियों में नहीं घुमाएगा, बल्कि अपने दिल में बसा लेगा।

कानपुर– जहाँ गंगा की धार, इतिहास की पुकार, स्वाद की बहार और बाज़ार की चहल–पहल मिलकर एक शहर नहीं, एक जीवन शैली रचते हैं। अगर आप कभी उत्तर भारत आएं और कानपुर न देखें– तो समझिए आपने भारत के दिल की एक धड़कन मिस कर दी।

'कानपुर, एक शहर नहीं।।। एक रोमांचक कहानी है– जिसे जीना पड़ता है!'

मंजुल मिश्रा
निजी सचिव, रेलवे बोर्ड

मान बढ़ाती हिंदी

अंतर्मन जब फूट पड़ा
या जब मन से उद्‌गार उठे
हो प्रेम, पीड़ा, स्नेह, उमंग
या जब भाव के निकले तरंग
कहन की अभिलाषा लिए
शब्दों से रूप सजाती हिंदी।

क्रांति की लौ जगाते दिनकर
महादेवी स्नेह और करुणा का सागर
लिए निराला एक अक्खड़पन
प्रेम अनुराग, प्रसाद लिए
साहित्य शिल्पों की भाषा सेवा से
जीवन की राह दिखाती हिंदी।

सरहद पार जब अपनी भाषा से
आप लोगों का स्वाभिमान बढ़ाये
आज़ादी का मतलब समझाकर
हिंदी का भी मान बढ़ाये
भाषा के माथे की बिंदी
सजाकर शब्द यूँ हर्षाती हिंदी।

अतुल कुमार
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, रेलवे बोर्ड

हिंदी भाषा का महत्व : एक लघु चर्चा

पात्र

1. कन्हैया– अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वाला छात्र
2. शिव– सामाजिक विषयों का छात्र
3. अभिषेक– हिंदी साहित्य में गहरी रुचि रखने वाला
4. शशि– तकनीकी विषय का विद्यार्थी
5. बेला– तर्क–वितर्क में रुचि रखने वाली

दृश्य– विद्यालय के पुस्तकालय में लंच ब्रेक के दौरान पाँच मित्र चर्चा कर रहे हैं।

कन्हैया : (किताब बंद करते हुए) यार, कभी–कभी सोचता हूँ कि अंग्रेजी के बिना आज के ज़माने में कुछ भी संभव नहीं है। हर जगह उसी की मांग है– नौकरी में, पढ़ाई में, तकनीकी क्षेत्रों में।

शशि : सही बात है। इंटरव्यू से लेकर इंटरनेट तक, सब जगह अंग्रेजी का बोलबाला है।

बेला : (मुस्कराते हुए) शशि, अंग्रेजी जरूरी हो सकती है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हमारी अपनी भाषा, यानी हिंदी, कम महत्त्वपूर्ण है।

अभिषेक : हाँ, बिल्कुल सही कहा बेला ने। भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं होती, वह हमारी संस्कृति, पहचान और सोच का भी प्रतिबिंब होती है। हिंदी तो हमारी आत्मा की आवाज़ है।

शिव : बिल्कुल ठीक कहा तुमने, अभिषेक! हिंदी तो हमारी पहचान है। जिस भाषा में हमने बचपन में बोलना सीखा, जिसे हमारी दादी–नानी बोलती थीं, वही हमें हमारी संस्कृति से जोड़ती है।

कन्हैया : लेकिन सोचो, विज्ञान, टेक्नोलॉजी, या अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आगे बढ़ने के लिए तो अंग्रेजी ही सबसे ज्यादा उपयोगी है।

बेला : मैं मानती हूँ कि अंग्रेजी एक वैश्विक भाषा है, लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हिंदी हमारी राजभाषा है। यह करोड़ों भारतीयों की मातृभाषा भी है। यदि हम अपनी भाषा को ही कम आँकेंगे, तो दूसरों से कैसे अपेक्षा करेंगे कि वे हमारी संस्कृति को सम्मान दें?

अभिषेक : और हिंदी तो अब तकनीक से भी जुड़ रही है। सरकारी वेबसाइट्स, मोबाइल ऐप्स और यहाँ तक कि AI और चैटबॉट्स भी हिंदी में उपलब्ध हैं। इससे पता चलता है कि हिंदी सिर्फ अतीत की भाषा नहीं है, बल्कि भविष्य की भी भाषा बन सकती है।

शशि : देखो, मैं तकनीकी विषय पढ़ता हूँ और इस विषय की ज्यादातर सामग्री अंग्रेजी में उपलब्ध है। लेकिन हाल ही में हिंदी में भी बहुत कुछ अनूदित किया गया है। सरकार इस ओर ध्यान दे रही है।

शिव : और सबसे बड़ी बात यह है कि कोई भी देश तब तक पूरी तरह विकसित नहीं हो सकता, जब तक वह अपनी मातृभाषा में सोच और काम करना शुरू न कर दे। चीन, जापान, फ्रांस– इन देशों ने अपनी भाषाओं को कभी नहीं छोड़ा।

कन्हैया : लेकिन क्या हिंदी में सब कुछ संभव है? जैसे विज्ञान, गणित, कानून?

अभिषेक : क्यों नहीं! हिंदी में अनुवाद, तकनीकी शब्दावली और संसाधन तेजी से बढ़ रहे हैं। भारत सरकार भी अब राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए राजभाषा सम्मेलन, हिंदी पखवाड़ा और पुरस्कार योजनाएं चला रही है।

शिव : और अब तो AI और मशीन ट्रांसलेशन के जरिए हिंदी में इंटरनेट सामग्री भी काफी आ रही है। ये तकनीक अब हिंदी को वैश्विक मंच तक पहुँचा रही है।

शशि : (सोचते हुए) हाँ, यह बात तो सही है। लेकिन क्या आज के युवा हिंदी को लेकर गंभीर हैं?

बेला : यही तो चिंता है। अगर हम जैसे पढ़े–लिखे लोग हिंदी को ''गांव की भाषा'' समझकर त्याग देंगे, तो उसका भविष्य कैसे सुरक्षित रहेगा? हमें हिंदी को सम्मान और गर्व के साथ अपनाना होगा।

अभिषेक : और याद रखो, महात्मा गांधी ने कहा था–

''राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।''

शिव : हमें ये समझना चाहिए कि भाषा केवल संप्रेषण का साधन नहीं, बल्कि भावनाओं, विचारों और संस्कारों का वाहक है। जब हम हिंदी में सोचते हैं, तो भावनाएँ ज्यादा सशक्त होती हैं।

बेला : बिल्कुल! और हिंदी तो वह भाषा है जो भारत की विविधता को एकता में बदलती है। उत्तर से दक्षिण, पूरब से पश्चिम– हिंदी लोगों को एक सूत्र में जोड़ती है।

शशि : (मुस्कुराकर) अब समझ में आ रहा है कि केवल एक भाषा को जानना काफी नहीं है। हमें अपनी जड़ों से भी जुड़े रहना चाहिए। शायद इसी संतुलन में सच्चा विकास छिपा है।

बेला : बिल्कुल! अंग्रेजी सीखो, ज्ञान प्राप्त करो, लेकिन हिंदी को अपनी आत्मा से जोड़कर रखो। तभी हम आधुनिक भी रहेंगे और अपनी पहचान भी बचाए रखेंगे। और अगर हम पढ़े–लिखे युवा ही हिंदी को पीछे करेंगे, तो उसकी पहचान कैसे बचेगी?

अभिषेक : हमें गर्व के साथ हिंदी का प्रयोग करना चाहिए– स्कूल में, घर में, सोशल मीडिया पर– हर जगह!

कन्हैया : सही कहा आपने। चलो, क्यों न हम मिलकर हिंदी पखवाड़ा के लिए 'हिंदी : विकास की भाषा' पर एक प्रस्तुति तैयार करें?

शशि : बहुत अच्छा विचार है! इस बार मैं भी साथ दूँगा– और अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने की कोशिश भी करूँगा ।

सभी : (एक साथ) वाह! शानदार विचार!

अभिषेक कुमार प्रसाद
कनिष्ठ अनुवादक, सियालदह मंडल, पूरे

अभिनय प्यार का

प्यार के अभिनय में
सुख है जितना
उतना तो प्यार के
होने में भी नहीं
बना सकते हैं अपनी हर मुद्रा
आकर्षक और अभूतपूर्व
एक ही अवधि में
कर सकते हैं हम अभिनय
मिलन का/विछोह का –
और तत्काल ही हो सकते हैं
हम उसके सम्मोहन से मुक्त।
उस अभिनय से
सीख पाते हैं–
वास्तविक प्यार का अर्थ !
पर हमारे भीतर जो रहता है

विद्यमान
प्यार का आनन्द –
कभी भी नष्ट न होने वाला
अखण्ड और शब्दातीत
उसका तो कोई पर्याय नहीं –
बस इसको पहचानने
और भीतर से हमारे जीवन में
व्यवहृत कर
बाहर प्रकट करने में –
कभी–कभी तो सारी जिंदगी
निकल जाती है –
एक पछतावे की तरह
हमें पीछे छोड़कर।

श्रीमती विजया गोस्वामी
सेवानिवृत्त, कृषि विपणन निदेशालय

भारतीय रेल की आत्मकथा

मैं हूँ – भारतीय रेल,
इस विशाल देश की धड़कन, इसकी नसों में दौड़ता जीवन।

मेरा जन्म 16 अप्रैल, 1853 को हुआ, जब मैंने पहली बार मुंबई से ठाणे तक 34 किलोमीटर का सफर तय किया। वो दिन मेरी पहली सांस था, और तब से लेकर आज तक, मैं थकी नहीं हूँ।

शुरू में मैं सिर्फ अंग्रेज़ों की जरूरत थी – उनके माल, उनके सैनिक, उनके व्यापार के लिए। लेकिन समय के साथ, मैं बन गई भारत के लोगों की रेल। मैंने देखा है देश का बंटवारा, आज़ादी की लड़ाई, और विकास की उड़ान। मैंने बिछते हुए पुल देखे, खुदते हुए सुरंगें देखीं, और बढ़ती हुई उम्मीदें देखीं।

मेरे डिब्बों में सफर सिर्फ दूरी का नहीं, बल्कि भावनाओं का होता है–

कभी माँ की विदाई के आँसू,
कभी प्रेमियों की चोरी–छुपी मुलाकात,
कभी मजदूरों की मजबूरी,
तो कभी पर्यटकों की मस्ती।
कभी नानी के घर जाने की खुशी
तो कभी स्कूल के पिकनिक की हंसी ।
मेरी पटरी पर न केवल पहिए चलते हैं,
बल्कि एकता, विविधता और प्रगति की कहानी भी लिखते हैं,
मैंने काबिल युवाओं को रोजगार दिया है
उनके सपनो को पंख लगाए हैं।
मैंने बड़े–बड़े शहरों को गाँवों से जोड़ा,
मैंने व्यापार को गति दी,
मैंने त्योहारों में लाखों को अपनों से मिलाया,
मैंने करोड़ों को कुम्भ नहलाया है।
आज मैं वंदे भारत की रफ्तार हूँ,
तो कहीं नीलगिरी की ठंडी सीटी भी हूँ।
मैं हूँ लंबा गोरखपुर प्लेटफॉर्म,
मैं हूँ खुशबू से भरा चाय वाला स्टेशन।
मेरे इंजनों की गड़गड़ाहट में,
देश की धड़कन है।
मैं रुकती नहीं, थमती नहीं,
मैं चलती हूँ, हर सुबह, हर रात।
क्योंकि मैं सिर्फ रेल नहीं,
मैं भारत हूँ – चलता हुआ, जुड़ता हुआ, बढ़ता हुआ
भागता हुआ, निखरता हुआ, विकास की ओर अग्रसर होता हुआ ।

प्रतीक भारद्वाज
वरिष्ठ गाड़ी प्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे

जीवन में उत्कृष्टता के लिए अनिवार्य है श्रेष्ठ विकल्पों का चयन

स्कूटर अथवा अन्य वाहनों के मुकाबले में कार अपेक्षाकृत अधिक आरामदायक व सुरक्षित सवारी है। कई लोग कार तो रखते हैं लेकिन उसका उपयोग या तो नहीं करते या फिर बहुत ही कम करते हैं। यदि हम कार का उपयोग नहीं करते अथवा बहुत कम करते हैं तो कार रखने का क्या लाभ? जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी हमारे साथ प्रायः ऐसा ही होता है। हमारे पास प्रयोग के लिए बेहतर अथवा बहुत अच्छी चीजें होती हैं लेकिन हम बेहतर अथवा बहुत अच्छी चीजों का उपयोग करने के बजाय सामान्य या बेकार चीजों का इस्तेमाल करते रहते हैं क्योंकि हम प्रायः बेहतर अथवा बहुत अच्छी चीजों को भविष्य के लिए सुरक्षित कर लेना चाहते हैं लेकिन वास्तविकता ये है कि ऐसा कोई विशेष दिन कभी नहीं आता जब हम बेहतर चीजों का प्रयोग कर सकें। यदि हम रोज ताजा भोजन बनाएँ लेकिन खाएँ रोज पिछले दिन का बचा बासी भोजन तो इससे क्या होगा? क्या ये उचित होगा कि हम साफ–सुथरे फलों को रख दें कि कल खाएँगे और गले–सड़े फल आज खा लें? इससे हमारा स्वास्थ्य ही बिगड़ेगा।

हम जब तक सड़े–गले फलों और बासी भोजन को सँभाल कर रखते रहेंगे कभी वो दिन नहीं आएगा जब हम ताजा भोजन और साफ–सुथरे फल खा सकें। यदि हमें अपने जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना है तो कम उपयोगी अथवा निरर्थक चीजों व स्थितियों से छुटकारा पाना ही होगा अन्यथा हम जीवन में आगे बढ़ने की बजाय और अधिक पिछड़ जाएँगे। ज़रूरी है कि हम इस प्रकार की योजना बनाएँ अथवा व्यवस्था करें कि हमें हमेशा ही ताज़ा भोजन व दूसरी खाने–पीने की चीजें भी साफ–सुथरी ही मिलती रहें।

कई बार भौतिक पदार्थों पर हमारा वश नहीं चलता। पर्याप्त देख–भाल के बावजूद चीज़ें खराब हो सकती हैं। स्थितियाँ भी कई बार हमारे नियंत्रण से बाहर हो जाती हैं। लेकिन कुछ चीज़ें अथवा स्थितियाँ ऐसी होती हैं जिन पर हमारा पूरा नियंत्रण होता है। मान लीजिए हम दस कि.मी. तक दौड़ सकते हैं लेकिन हम कभी दो–तीन कि.मी. से अधिक नहीं दौड़ते। आखिर हम अपनी क्षमता का पूरा इस्तेमाल क्यों नहीं करते?

कई व्यक्ति मितव्ययी होते हैं इसलिए कम खर्च करते हैं। आज के समय में प्रदूषण से मुक्ति व परिवेश को बचाए रखने के लिए भी संसाधनों का दुरुपयोग रोकना अनिवार्य है और इसके लिए कम उपभोग करना एक कारगर उपाय प्रतीत होता है। इसलिए अनिवार्य हो जाता है कि हम कम वस्तुओं का उपभोग करें और केवल वे चीज़ें ही खरीदें जो हमारे लिए अत्यावश्यक हों। भौतिक वस्तुओं के संदर्भ में इस प्रकार की मितव्ययता अथवा अपरिग्रह बहुत अच्छी बात है लेकिन हमारी आदतों अथवा व्यवहार के क्षेत्र में इस प्रकार की मितव्ययता से कोई लाभ नहीं होता अपितु हानि हो जाती है।

हमारी आदतों और व्यवहार के विषय में ये तथ्य पूरी तरह से लागू होता है। यदि आज हम अपनी क्षमता का भरपूर इस्तेमाल नहीं करते तो फिर कब करेंगे? यदि हमने आज अपने व्यवहार को उत्कृष्ट नहीं बनाया तो कब बनाएँगे? यदि आज हम लोगों के साथ निकृष्ट व्यवहार करेंगे तो भविष्य में उत्कृष्ट व्यवहार का भी कोई विशेष लाभ हमें नहीं मिलेगा।

हम जो कार्य अच्छी तरह से कर सकते हैं उसको करने में आनाकानी क्यों करते हैं? और यदि करते भी हैं तो लापरवाही से कामचलाऊ काम क्यों करते हैं? यदि हम अपनी क्षमता का भरपूर इस्तेमाल नहीं करेंगे तो एक दिन वो मात्र उतनी ही रह जाएगी जितना हम उसका इस्तेमाल करते हैं। यदि हमारे पास कार है तो स्कूटर रखने का क्या औचित्य हो सकता है? यदि कोई ये कहे कि स्कूटर में कम खर्च होता है और कार में ज्यादा, अतः दोनों के रखने से औसत खर्च कम हो जाता है तो ये भयंकर भूल है। दो वाहनों के रखरखाव व टूट–फूट में इतना अधिक व्यय हो जाता है कि एक अच्छा व अपेक्षाकृत महंगा वाहन रखने पर भी ढेर सारी बचत ही होगी। इसके बावजूद भी यदि कोई दो वाहन रखने और छोटे और कम सुविधाजनक वाहन का प्रयोग करने का विकल्प चुने तो क्या किया जा सकता

है? कई बार बहुत सयाने किस्म के लोग इसका भी ऐसा जवाब दे देंगे कि आप निरुत्तर हो जाएँ लेकिन वास्तविक तथ्यों की उपेक्षा करने को समझदारी तो बिलकुल नहीं कहा जा सकता।

वास्तव में समस्या का कारण हमारे पास अच्छे और कम अच्छे या बुरे विकल्पों का होना और हमारे द्वारा उन सभी का प्रयोग करना है। जब हमारे पास अच्छे अथवा श्रेष्ठ विकल्प उपलब्ध हैं तो हम कम अच्छे या बुरे विकल्पों का चयन करते ही क्यों हैं? और तो और हमारी सोच के साथ भी ऐसा ही होता है। हमारी छोटी सोच के कारण बड़ी सोच का विकास ही नहीं हो पाता। वह अविकसित रह जाती है।

हम बड़ा सोचने में भी कंजूसी करते हैं जबकि हमारे जीवन का विकास पूर्णतः हमारी सोच पर निर्भर करता है। जैसी सोच वैसा जीवन। जैसी सोच वैसी समृद्धि। जैसी सोच वैसा स्वास्थ्य। जैसी सोच वैसे संबंध। फिर भी हम अपनी सोच को बड़ी व सकारात्मक क्यों नहीं बनाते? हमें अपनी इस आदत को बदल डालना चाहिए अन्यथा हम श्रेष्ठ विकल्पों के होते हुए भी जीवन में छोटी सोच का उपयोग करके पर्याप्त उन्नति नहीं कर पाएँगे। विचारों की दरिद्रता अथवा छोटी व नकारात्मक सोच हमारे जीवन के विकास में सबसे बड़ी बाधा बनती है इसमें संदेह नहीं।

हमारे अंदर अनेक प्रकार के विचार विद्यमान रहते हैं। हमारे अंदर नकारात्मकता भी होती है तो सकारात्मकता भी होती है। हमारे अंदर ही कम उत्साहपूर्ण विचार भी होते हैं तो पूरी तरह से उत्साहपूर्ण विचार भी होते हैं। ये हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम सकारात्मक विचारों को महत्त्व देते हैं अथवा नकारात्मक विचारों को। हम निराशावादी अथवा कम आशावादी बने रहते हैं अथवा पूर्ण आशावादी। यदि हमें अपने जीवन में सफलता प्राप्त करनी है अथवा अपने व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाना है तो हमें जीवन के उज्ज्वल पक्षों का चुनाव करना होगा। जिस प्रकार से आरामदायक व सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करने के लिए कम आरामदायक व कम सुरक्षित स्कूटर से मुक्ति पाना अनिवार्य है उसी प्रकार से जीवन में पूर्ण सफलता व व्यक्तित्व के समग्र विकास के लिए कम उपयोगी अथवा निरर्थक विचारों से मुक्ति अनिवार्य है। जब तक मन में कमज़ोर मनोभाव व्याप्त रहेंगे उनका प्रभाव भी पड़ता रहेगा।

दुख की बात ये है कि हम बहुत कुछ जानते हैं और हममें बहुत कुछ करने की क्षमता भी होती है लेकिन अपनी अकर्मण्यता अथवा नकारात्मकता के कारण हम अपनी जानकारी व क्षमता का भरपूर इस्तेमाल नहीं करते अथवा कर पाते। हमारे अंदर बहुत से दुर्गुण हैं तो बहुत से सद्‌गुण भी हैं। हम जानते हैं कि किसी की मदद करना अच्छी बात है लेकिन जब किसी की मदद करने का अवसर आता है तो हम पीछे हट जाते हैं। मदद न करने का कोई न कोई बहाना खोज लेते हैं। हमें इस आदत से बचना चाहिए। यदि हम किसी की मदद कर सकते हैं तो हमें अवश्य ही मदद करनी चाहिए और अपनी क्षमता से बढ़कर मदद करनी चाहिए। हम मदद कम करते है प्रचार अधिक करते हैं।

यदि हम प्रचार के लोभ से मुक्त होकर व अपनी क्षमता से बढ़कर किसी की मदद कर देते हैं तो उससे जो आनंद मिलता है वह दुर्लभ है। लेकिन ये तभी संभव है जब हम अपने छोटी सोच रूपी स्कूटर से उतरकर बेहतर सोच रूपी कार पर सवार हो जाएँ। इसी प्रकार से यदि हमें किसी का अभिवादन करना हो तो भी हम आधे–अधूरे मन से ये क्रिया संपन्न करते हैं जबकि हम ये पूर्ण उत्साह से भी कर सकते हैं। और इससे न केवल पारस्परिक संबंध मधुर रहेंगे अपितु संबंधों में क्रमशः सुधार भी होता रहेगा। जब हम किसी का अच्छी तरह से स्वागत–सत्कार कर सकते हैं तो उपेक्षा करने की क्या जरूरत है? हम आसानी से मृदु भाषा में व्यवहार कर सकते हैं तो कटु वचनों का प्रयोग क्यों करें?

हमें चाहिए कि हमने जो भी अच्छा सीखा है उसे अपने व्यवहार में लाएँ और जो इसमें बाधक है उससे हर हाल में मुक्त होने का प्रयास करें। हमारे पास दोनों विकल्प हैं लेकिन हम सही का चुनाव करना नहीं जानते अथवा नहीं चाहते। जिस दिन हम उपलब्ध श्रेष्ठ विकल्पों का प्रयोग करने की आदत डाल लेंगे जीवन की दशा और दिशा दोनों बदल जाएँगी। जीवन रूपी सफर आरामदायक और सुरक्षित हो जाएगा।

हमें न केवल अपनी मंज़िल तक का सफ़र करने में आसानी होगी अपितु अपेक्षाकृत कम समय में भी वहाँ पहुँच सकेंगे। जीवन में सचमुच कुछ बड़ा करने के लिए छोटे–छोटे अथवा कम महत्त्व के कार्यों से छुटकारा पाना अनिवार्य है अन्यथा हमारी सारी ऊर्जा कम महत्त्व के अथवा अनुपयोगी कार्यों में ही व्यय हो जाएगी, जिससे बड़े कार्यों को करने के लिए न तो ऊर्जा ही बचेगी और न पर्याप्त समय ही बच पाएगा।

सीताराम गुप्ता
ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा, दिल्ली–110034

बंटवारा

'गाँव' शब्द सुनते ही मन में कितने ख़याल भर आते हैं। वे हरे–भरे खेत, कमल से भरा तालाब, बैलगाड़ी की सवारी और भी बहुत कुछ। आज कल कहाँ 'गाँव' देखने को मिलता है। अब तो शायद यह शब्द किताबों या फ़िल्मों तक ही सीमित रह गया है। आजकल सबका सपना है, शहर में जाकर वहीं का हो जाने का। फिर चाहे बचपन गाँव में ही क्यों न बीता हो।

ऐसे ही एक गाँव में किसी ने अपनी ज़िंदगी की हसीन शुरुआत की थी। अपना घर, ईंट और पत्थरों से नहीं बल्कि प्यार और सम्मान से भरा, बनाया था। वहीं पर जन्मा और वहीं का होकर रहने की इच्छा करते हुए उसने गाँव की ही एक लड़की से विवाह किया। प्यार और खुशियों से भरे दिन देखते–देखते गुज़रने लगे। दोनों ही अपनी ज़िंदगी में एक–दूसरे के साथ खुश थे। कुछ दिनों में उनके आँगन में बच्चों की किलकारियाँ गूंजने लगी थीं। लगता है जैसे कल की ही बात हो, नई–नई शादी हुई थी और आज देखो, तीन बच्चों के माता–पिता बन गए हैं।

दोनों बहुत खुश थे। हों भी क्यों ना, तीन बच्चे जो थे उनके और वे भी सारे लड़के। अब तो उनका सारा ध्यान बच्चों की परवरिश में ही लगा रहता था। उनकी पढ़ाई, अच्छा खाना, कपड़े वगैरह। गाँव वाले भी बच्चों से प्यार करने लगे थे। एक अजीब सा रिश्ता बन जाता है हर किसी का एक–दूसरे से– यही तो खासियत है गाँव की। चाहे कितनी भी मुश्किलें क्यों ना पड़ जाएं, गाँववाले हमेशा एक–दूसरे का साथ देते हैं। ऐसी एकता शहर में शायद ही देखने को मिले!

इसी गाँव की गलियों में खेलते, कूदते, स्कूल में पढ़ते, दोस्त बनाते बचपन कब गुज़रा, पता ही नहीं चला। देखते–देखते वे तीनों बच्चे बड़े हो गए। "अब उनको आगे की पढ़ाई के लिए शहर जाना पड़ेगा, पता नहीं कैसे संभालेंगे खुद को"– उनके माता–पिता सोच रहे थे। शहर का वातावरण उन्हें पसंद नहीं था, क्योंकि वहाँ किसी के पास, किसी के लिए वक्त ही नहीं होता। लेकिन वे कुछ कर भी नहीं सकते थे। हर माँ–बाप का सपना होता है कि उनके बच्चे पढ़–लिख कर कुछ बन जाएं। इसलिए ना चाहते हुए भी उन्हें शहर भेजने के लिए तैयार होना पड़ा।

बड़े बेटे की गाँव के स्कूल में पढ़ाई ख़त्म हो चुकी थी। उसकी माँ ने जब उसे बताया कि अब उसे आगे की पढ़ाई के लिए शहर में जाना होगा, तो वह बिलकुल राज़ी नहीं हुआ। उसने ना कभी शहर देखा था और ना ही अपनी माँ के बिना कभी कहीं रहा था। पढ़ाई में वह बहुत अच्छा था और हर बात को जल्दी समझ भी जाता था, इसलिए उसके पिताजी नहीं चाहते थे कि वह आगे की पढ़ाई रोककर खेती–बाड़ी में मन लगाए। बड़ा बेटा होने के नाते उसकी कुछ जिम्मेदारियाँ भी थीं, जिनको निभाने के लिए उसे नौकरी करने की ज़रूरत थी।

काफी समझाने और सोच–विचार करने के बाद, बहुत मुश्किल से वह शहर जाने के लिए राज़ी हुआ। पढ़ाई में अव्वल रहने की वजह से, उसे अच्छे कॉलेज में दाख़िला मिल गया। पहले–पहले शहर में उसका मन बिल्कुल नहीं लग रहा था। हर छुट्टी में वह अपने गाँव जाता था और वहाँ की हरियाली भरे खेत, ताज़ी हवा, माँ के हाथ का खाना, पिता संग खेत में घूमना और थोड़ी–बहुत मदद करना, उसे अच्छा लगता था।

धीरे–धीरे जब पढ़ाई का भार बढ़ा, तो उसका गाँव में जाना थोड़ा कम हो गया। आखिर उसे एक अच्छी नौकरी मिल गई थी। बड़ी खुशी से वह इस खुशखबरी के साथ अपने गाँव गया। गाँववाले उसकी इस तरक्की पर बहुत खुश थे और उसपर अपना आशीर्वाद बरसा रहे थे। उसके माता–पिता भी बहुत खुश थे, उसकी इस तरक्की पर। उन दोनों ने उसके साथ उसके दोनों भाइयों की आगे की पढ़ाई के बारे में बात करते हुए बताया कि उन्हें भी शहर में किसी कॉलेज में दाखिला करवा दे। इस पर मंझले बेटे और छोटे बेटे ने पहले तो आपत्ति जताते हुए शहर जाने की मनाही कर दी, फिर जब उनके माता–पिता ने उन

दोनों को उनके बड़े भाई के साथ रहने के लिए कहा और बड़े भाई ने जब यह आश्वासन दिया, तब वे दोनों भाई अपने बड़े भाई के साथ शहर जाने के लिए राज़ी हुए।

अब तीनों भाई शहर में साथ रहने लगे थे। बड़े बेटे की नौकरी के चलते, उसका गाँव में जाना थोड़ा कम होने लगा था। चूंकि मंझले और छोटे बेटे की पढ़ाई अभी पूरी नहीं हुई थी, इसलिए दोनों अपनी छुट्टियों में अपने माता–पिता से मिलने गाँव जाते थे। लौटते वक्त माँ उनके हाथों कई स्वादिष्ट पकवान बनाकर भेजती थी और शहर में तीनों भाई मिलकर खुशी से खाते थे। देखते–देखते दोनों की पढ़ाई भी ख़त्म हो गई और दोनों नौकरी की तलाश में लग गए। बड़े भाई की मदद से उन दोनों को भी अच्छी नौकरी मिल गई। जब यह खबर उन्होंने अपने गाँव भेजा, तो गाँववाले और उन तीनों के माता–पिता बहुत खुश हुए।

धीरे–धीरे तीनों का गाँव में जाना कम होने लगा था। उधर गाँव में माता–पिता भी उनसे मिलने के लिए तरसने लगे थे। पर वे दोनों गाँव से निकलकर शहर में जाना नहीं चाहते थे। इसलिए उन्हें किसी त्योहार का इंतज़ार रहता था, कि कब कोई त्योहार आएगा और उनके तीनों बेटे उनसे मिलने गाँव आएंगे। गाँव वालों ने उन्हें कई बार कहा, शहर जाकर अपने बेटों से मिल आएं और थोड़ा शहर भी घूम आएं, पर वे दोनों राज़ी नहीं होते थे। इस बीच कई महीने बीत गए थे। बेटों से मिलने की इच्छा करते हुए, माँ ने आने वाले समय में गाँव में होने वाली पूजा में, अपने बेटों को आने के लिए खबर पहुँचाई। ख़बर मिलते ही तीनों भाई छुट्टी लेकर गाँव के लिए रवाना हो गए। तीन दिनों की पूजा का आनंद, पूरे परिवार ने एक साथ उठाया। फिर तीनों भाई अपने माता–पिता का आशीर्वाद लेकर गाँव से वापस शहर में आ गए।

सोनाली सुधास्मिता त्रिपाठी
सामान्य सहायक, पूर्व तट रेलवे

सच है, विपत्ति जब आती है,
कायर को ही दहलाती है,
सूरमा नहीं विचलित होते, क्षण
एक नहीं धीरज खोते, विघ्नों
को गले लगाते हैं, काँटों में राह
बनाते हैं।

~ रामधारी सिंह "दिनकर"

नानी का गाँव

हिल स्टेशन से सुंदर
मेरी नानी का गाँव,
वहाँ आम जामुन बरगद
और गंगा मैया में नाव,

कच्ची पक्की झोपड़ियां
सबको देती शीतल छाँव,
कोयल की कूक गूंजती
करता कौवा कांव–कांव,

दादा जी के कंधे पर घूमता
देता नहीं किसी को भाव,
प्यास लगी तो कूप बुलाता
मेरा मीठा जल पी जाओ,

दौड़ते झूमते मेड़ों पर
कभी न थके कोमल पाँव,
ठंडी हवा की पुरवाई कहती
तुम आ जाओ प्यारे गाँव।

रेखा शाह आरबी
बलिया (यूपी)

राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन जैसे मंचों का महत्व

सभा, संगोष्ठी और सम्मेलन
राजभाषा का जब प्रसार हो प्रण
मंचों से तब मिलते मन
धरती चूम लेती है गगन
विकसित भारत की वाणी हो हिंदी
है भारत मां के माथे की ये बिंदी

भारत विविधताओं का देश है जहाँ इन विविधताओं में भी एक सांस्कृतिक एकता परिलक्षित होती है। उत्तर में परर्वतराज हिमालय, दक्षिण में महासागरों का तटबंध, इसी प्रकार से पश्चिम एवं पूरब में प्राकृतिक सीमाबंध इसे एक पूर्ण महाद्वीप के रूप में परिभाषित करते हैं। यहाँ भिन्न–भिन्न संस्कृतियाँ, परम्पराएँ एवं भाषाएँ मौजूद हैं। हर ग्राम, हर कस्बे के लोगों के अलग–अलग विचार, भिन्न–भिन्न मान्यताएँ हैं। लोकतांत्रिक सुंदरता का सबसे सुंदर दृश्य यहाँ के सम्मेलनों, संगोष्ठियों आदि में दिखता है, जहाँ एक मंच के माध्यम से हम अपने विचारों को देश के दूसरे कोने तक पहुँचाते हैं। यह सम्मेलन विभिन्न विषयों जैसे पर्यावरण संरक्षण, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ इत्यादि के समर्थन में देखने को मिलते हैं। राजभाषा नीति का अनुपालन करते हुए हमारे लगभग सभी सरकारी व सार्वजनिक क्षेत्र के संस्थान भी ऐसे ही कई सम्मेलनों का आयोजन करते हैं। इसका सबसे सजीव उदाहरण आजकल 14 सितंबर को आयोजित होने वाला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन है, जिसमें पूरे भारत के कोने–कोने से राजभाषा के क्षेत्र में कार्य कर रहे 'भाषाई सैनिक' एक मंच पर, एक साथ अपने विचारों को और सुदृढ़ बनाते हैं। यह सम्मेलन विगत वर्षों में भाषा के क्षेत्र में हुई प्रगति पर तो प्रकाश डालता ही है, साथ ही भारतीय भाषाओं के आगामी आयोजनों पर चर्चा भी करता है।

राजभाषा के प्रचार एवं प्रसार के लिए अन्य माध्यमों के साथ–साथ राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर के सम्मेलनों का आयोजन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। ये सम्मेलन राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने, ज्ञान एवं भाषा कौशल को विकसित करने और राजभाषा नीति के बारे में जागरूकता एवं ज्ञान बढ़ाने में सहायता प्रदान करते हैं। इन सम्मेलनों का उद्देश्य न केवल हिंदी भाषा की महत्ता को प्रतिष्ठित करना है, बल्कि इसे समाज के सभी वर्गों में लोकप्रिय बनाना भी है। आप कभी भी किसी संगठन के राजभाषा विभाग का ब्योरा करें, आप निःसन्देह यह पाएंगे कि वहाँ के राजभाषा विभाग या प्रभाग में कार्यरत कार्मिक भारत के विभिन्न कोनों से आए होंगे। किसी कार्मिक की मूलतः मातृभाषा मलयालम होगी तो किसी की असमिया। कोई राजभाषा अधिकारी मुंबई जैसे महानगर से आता होगा तो कोई अनुवादक कन्याकुमारी से। यह 'विविधता में एकता' वाली खूबसूरती भारत में ही मिलती है। इन क्षेत्रीय व राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलनों व मंचों के माध्यम से मिलने वाली उपलब्धियां व अवसर कुछ इस प्रकार हैं–

क) संस्कृति का विस्तार– भाषा मात्र संवाद का माध्यम नहीं है, बल्कि यह संस्कृति का, परंपरा का व साहित्य का अभिन्न अंग है। जितना पुराना इतिहास, उतनी ही पुरानी सभ्यता और उतनी ही लंबी उस धरती की भाषाई यात्रा। भारत जहाँ सभ्यता अनंतकाल से आज भी गतिमान है, उसका दर्शन, साहित्य व संगीत भी उतना ही धनी है। विभिन्न क्षेत्रीय व राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलनों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है, जिससे सभी देशवासियों को देश के अन्य हिस्सों की संस्कृति के बारे में पता चलता है। ये कार्यक्रम कभी गीत, कविता, नाटक इत्यादि के रूप में होते हैं, तो कभी व्याख्यान, परिचर्चा व संवाद के माध्यम

से जो हिंदी की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के प्रचार–प्रसार में सहायक होते हैं।

ख) भाषाओं के मध्य परस्पर सहयोग– राजभाषा सम्मेलनों के माध्यम से देश के विभिन्न भाषाओं और बोलियों के मध्य परस्पर सहयोग बढ़ता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार के गृह मंत्रालय द्वारा सामूहिक रूप से जो राजभाषा दिवस व अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन की एक पहल शुरू की गई है, वह सच में एक बेहद ही सराहनीय कार्य है। हर बार एक नए शहर में इस सम्मेलन का आयोजन, राजभाषा विभाग के लिए कार्य कर रहे हजारों कर्मचारियों को उस राज्य, उसकी संस्कृति, उसकी भाषा से अवगत होने का एक सुनहरा अवसर प्रदान करता है। यह भाषाओं की 'विविधता में एकता' को स्वीकार करने में सहायक होता है एवं विभिन्न भाषाई समुदायों के मध्य आपसी समझ एवं सम्मान की भावना का विकास करता है।

ग) परस्पर विचार–विमर्श का मंच – राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय सम्मेलनों का एक उद्देश्य परस्पर संवाद स्थापित करना होता है। भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों के अधीन कार्य करने वाले विभागों व कार्यालयों की संख्या अनगिनत है। ये सम्मेलन व संगोष्ठियाँ इन विभागों में कार्य करने वाले विभिन्न विशेषज्ञों, भाषाविदों, अधिकारियों एवं छात्रों के मध्य परिचर्चा व संवाद का मंच प्रदान करते हैं, जिससे विचारों का आदान–प्रदान होता है और नए विचार व दृष्टिकोण को सामने लाने का अवसर मिलता है। इससे इन सभी कार्यालयों, विभागों व मंत्रालयों में एक बेहतर तालमेल स्थापित होता है व देश की उन्नति एवं प्रगति की गति में तेजी आती है।

घ) नीतियों का निर्धारण एवं निर्माण– भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में जनता के हित में बनने वाली नीतियों को कई बार मसौदे के रूप में या यूं कहें कि परिचर्चा व संवाद के लिए उनके समक्ष रखा जाता है, ताकि उसमें उचित संशोधन व सुधार किए जा सकें। ये सम्मेलन नीतियों के निर्माण एवं निर्धारण में सहायक होते हैं, जिससे सरकारी योजनाओं को अधिक प्रभावशाली ढंग से तैयार किया जाता है। यह न केवल भाषा को सशक्त बनाता है, बल्कि समाज के विकास में भी सहायक एवं उपयोगी होता है।

ङ) प्रशिक्षण एवं शिक्षा– बीते वर्षों में एमबीबीएस पाठ्यक्रम को हिंदी में उपलब्ध कराना मध्य प्रदेश सरकार का एक सराहनीय प्रयास रहा है। जब कोई मेडिकल या इंजीनियरिंग कॉलेज हिंदी भाषा में शिक्षण व प्रशिक्षण का कार्य करता है तो इससे भाषा सीखने एवं सिखाने के विभिन्न उपायों पर भी चर्चा की जाती है। शिक्षा विशेषज्ञों द्वारा हिंदी में दिशा–निर्देश दिए जाते हैं, जिससे लोग हिंदी भाषा को सरलता एवं सुगमता से आत्मसात कर पाते हैं। हिंदी भाषा की तकनीकी एवं साहित्यिक विशेषताओं पर भी विमर्श किया जाता है जो कि इसके प्रचार–प्रसार में अत्यधिक सहायक सिद्ध होता है। इसी प्रकार से राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (एनटीए) द्वारा न केवल हिंदी अपितु अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में परीक्षाएँ आयोजित कराना भी एक सराहनीय कदम है।

राजभाषा नीति के अनुपालन में विभिन्न संस्थानों द्वारा संगोष्ठी, सम्मेलन, बैठक व कार्यशालाओं के माध्यम से विभिन्न शिक्षण और प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये जाते हैं। इनका मुख्य उद्देश्य सरकारी कामकाज में हिंदी को बढ़ावा देना तो होता ही है, साथ ही उपस्थित कार्मिकों को राजभाषा नीति से अवगत कराना भी होता है। राजभाषा विभाग के अथक प्रयासों के बावजूद भी कई बार ऐसे कई कर्मचारी व कार्यालय देखने में मिलते हैं जो जानकारी न होने के कारण, राजभाषा नीति के अनुपालन में पीछे रह जाते हैं। राजभाषा विभाग, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) बैठकों जैसे विभिन्न मंचों के माध्यम से उन कार्यालयों व विभागाध्यक्षों तक पहुँच कर राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को गति देने का कार्य कर रहा है। हर शहर में स्थित ये नराकास की बैठकें राजभाषा के प्रचार–प्रसार में जो कदम उठा रही हैं, वह सच में प्रशंसनीय है।

च) उत्साह एवं अंतः प्रेरणा– राजभाषा वार्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से प्रेरणा व प्रोत्साहन के मंत्र से राजभाषा का प्रचार–प्रसार बड़े ही सुगम ढंग से किया जा रहा है। आज के समय में सभी सरकारी व सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में हिंदी पखवाड़ा, विश्व अनुवाद दिवस, विश्व हिंदी दिवस व अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस जैसे आयोजनों पर विभिन्न गतिविधियों–प्रतियोगिताओं आदि का आयोजन किया जाता है। वे कर्मचारी, सदस्य जो इन आयोजनों में भाग लेते हैं, उन्हें विशेषकर पुरस्कृत भी किया जाता है। इस तरह से ये कार्मिक हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार को तो संबल देते ही हैं, साथ ही हिंदी में कार्य करने में इनका मनोबल भी बढ़ता है। इन कार्यक्रमों के समापन समारोहों में जब लोग उपस्थित होकर एक–दूसरे के व्याख्यान एवं विचार सुनते हैं तो वे उत्साहित एवं प्रेरित भी होते हैं। उन्हें पता चलता है कि किस प्रकार हिंदी उनके जीवन में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

छ) कौशल एवं ज्ञान की वृद्धि– हम में से शायद ही कोई हो, जो हर कार्य व हर प्रकार के ज्ञान में निपुण हो। एक भारतीय सेना में कार्यरत सैनिक शायद एक बैंक प्रबंधक जितना वित्तीय ज्ञान न रखता हो, या फिर एक भारतीय रेल का कर्मचारी डीआरडीओ की टीम जिन चुनौतियों का सामना करती है, उनकी कल्पना भी न कर पाए। हम सभी अपने जीवन में एक सीमित क्षेत्र का ही ज्ञान रख पाते हैं। विभिन्न प्रकार के सम्मेलनों व संगोष्ठियों से हम दूसरे विभागों व कार्यालयों में कार्य कर रहे हमारे साथी, उनकी कार्यप्रणाली व उनकी चुनौतियों से तो अवगत तो होते ही हैं, साथ ही इससे एक–दूसरे के प्रति सम्मान व 'भारतीयता' का संवर्धन भी होता है।

निष्कर्ष

राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय सम्मेलनों का महत्त्व प्रशंसनीय है। भारत सरकार द्वारा अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन व क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों द्वारा इसी प्रकार के सम्मेलनों व संगोष्ठियों के माध्यम से हम सभी भारत की विविधता से भरी संस्कृति को बेहतर ढंग से समझ पाते हैं व एक–दूसरे के प्रति अपने दृष्टिकोण को एक नए पहलू से देखते हैं। आज हम विकसित भारत की यात्रा के प्रारंभिक दौर में अवश्य हैं, पर अभी यह यात्रा और जोश के साथ तय करनी है। हमारी विविधता हमारा अभिमान होना चाहिए। सभी भारतीय भाषाएँ इस भारत मां की बेटियाँ हैं। आज हमें अपने बीच सौहार्द व भाईचारे को बढ़ाना है। अपने गौरवान्वित इतिहास को पढ़ें, अपनी अगली पीढ़ी तक हमारे महानायकों की गाथाएँ सुनाना न भूलें। विदेशी भाषा सीखने से कोई परहेज नहीं है, पर अपनी भारतीय भाषाओं को सीखें, उसका प्रचार–प्रसार करें।

बैर नहीं हमें विदेशी भाषा से
पर पहला प्रेम मातृभाषा से
चलो तुम वसुधैव कुटुंबकम के मंत्र से
और मन में भारत मां बसे।

इस विकसित भारत और आधुनिकता की राह में भी हमारा साहित्य, हमारा दर्शन व हमारी भाषा हमें "विश्वगुरु" के खिताब को दोबारा वापिस लाने में सहायक होगी। तो आइये आगे तो बढ़ें, वैश्विक पटल पर अपना परचम लहराएँ, पर फिर भी अपने गौरवशाली इतिहास को न भूलें।

हरे राम मिश्र
सहायक कमांडेंट (सेवानिवृत्त), सीआरपीएफ

संकल्प

'जीवन' को यूँ ही बेमानी
जाने नहीं दूंगा मैं
कुछ अर्थपूर्ण
करने का प्रयास
रहेगा– सदा, जो
दे सके अंतस को– सुकूं
कि कुछ तो किया
'योगदान' मैंने
इस सृष्टि में
मानव होने के नाते।

अतुल कुमार
संयुक्त निदेशक, रेलवे बोर्ड

लाक्षागृह

मार्च का महीना मतलब क्लोजिंग का टाइम था। आजकल ऑफिस में काम बढ़ा हुआ था, बैंगलोर जैसे शहर में अकेली की कमाई से कुछ नहीं हो सकता था, मकान का किराया, कार की ईएमआई, घर के खर्चे और न जाने क्या–क्या...कभी–कभी लगता कि यहां जिन्दगी भी किस्तों में चल रही हो।

आजकल अनमोल और अलका दोनों को ही घर वापस आने में देर हो जाती थी। थकान से शरीर टूटने लगता। अनमोल और अलका दोनों ही मल्टी नेशनल कंपनी में काम करते थे। अलका का ऑफिस अनमोल के ऑफिस से थोड़ा दूर ही पड़ता था, वैसे तो महिला कर्मचारियों को घर जल्दी जाने की थोड़ी छूट रहती, पर इस वक्त लगभग सभी साथ ही निकलते थे। सामान्यतः कर्मचारी ऑफिस की बस से ही आते–जाते थे, पर अलका टैक्सी या ऑटो से ही जाना पसंद करती थी। बस सबको लेते–लवाते आती, इसलिए सुबह घर से जल्दी निकलना पड़ता और रात में सबसे आखिरी में छोड़ती। होने को घर में एक कार भी थी, पर उसे आलोक ले जाते। आलोक अपनी कंपनी के मैनेजर थे। थोड़ा पद–प्रतिष्ठा का भी ध्यान रखना पड़ता है।

आजकल अम्मा जी भी आई हुई थी, वैसे तो अधिकतर बड़े भइया के पास ही रहती थी। यहाँ उनका बिल्कुल भी मन नहीं लगता था। मन लगता भी तो कैसे...घर में था ही कौन? अनमोल और अलका सवेरे ही घर से निकल जाते। खाना भी वहीं कम्पनी में खा लेते, पर रात का खाना घर पर ही साथ खाते। अलका कोशिश करती थी कि जब तक अम्मा जी यहां पर हैं, वह ऑफिस से जल्दी पहुँच जाया करे, पर ऑफिस तो यह नहीं समझता। अम्मा जी मुंह से तो कुछ नहीं कहती, पर उनकी आँखें ही उनकी जुबान बन जाती और वह छलनी हो जाती।

अलका बार–बार घड़ी की ओर देख रही थी आज वाकई काफ़ी लेट हो गई थी, पर वह भी करती भी तो क्या...जब बॉस और बाकी कर्मचारी भी अभी नहीं निकले हैं तो वह कैसे निकलती। सब सीढ़ियों से उतर रहे थे, तभी ऑफिस की बस सामने आकर लग गई।

'बाय अलका! कल मिलते हैं।'

सह कर्मचारियों के अभिवादन को स्वीकार करती हुई वह मुस्करा दी। वह दो बार कैब बुक कर चुकी थी, पर हर बार कैंसिल हो जा रही थी। इस वक्त कोई ऑटो भी नहीं मिलेगी। उसने आलोक को फोन मिला दिया। शायद वे अभी ऑफिस से निकले न हो! उन्हीं को बुला लेती हूं, अलका ने सोचा...

''आलोक! आप कहां हैं?''

''मैं तो घर पहुँचने वाला हूं।''

''क्या हुआ तुम्हें अभी और टाइम लगेगा क्या?''

''नहीं काम तो पूरा हो गया, बस कैब का इंतज़ार कर रही हूं। दो बार बुक किया पर बुक होकर के कैंसिल हो गई।'' ''ओह! तुम कहो तो मैं तुम्हें लेने आ जाऊँ?''

''नहीं! अब आप उतनी दूर से मुझे क्या लेने आएंगे। दस मिनट और देखती हूं, कोई न कोई ऑटो या कैब मिल जाएगी।''

''अदिती भी मेरे साथ है, उसे भी आटो नहीं मिला तो मैंने कहा मेरे साथ ही चली चलो। अपने घर से थोड़ी ही दूर पर उसका घर है। अब इतनी रात में कहां सड़क पर परेशान होती रहती।''

''अच्छा किया, जैसा होगा आपको बताती हूं।''

अदिती आलोक की सेक्रेटरी थी, एक–दो बार मुलाकात भी हुई थी। सुन्दर सी, प्यारी सी अपने काम में निपुण. ..आलोक उसके काम से बेहद खुश थे, उसकी काफी तारीफ़ भी करते थे। आलोक जब तक ऑफिस में काम करते रहते, उसे भी रहना पड़ता था। आलोक ने कई बार उसे उसके घर ड्रॉप किया था। तभी किसी के जूते की आहट से अलका की तंद्रा टूटी।

''मिसेज सिंह! आप अभी यही हैं, घर नहीं गईं। काफी

देर हो चुकी है।''

कंपनी के मैनेजर मिस्टर सिंघानिया ने कलाई में बंधी अपनी ब्रांडेड घड़ी की तरफ देखते हुए कहा।

''सर बस जा ही रही थी। टैक्सी का वेट कर रही थी।''

''मे आई हेल्प यू!''

''हेल्प!'' सच पूछो तो इस वक्त उसे हेल्प की बहुत जरूरत थी। सड़क पर सन्नाटा पसरा हुआ था, टैक्सी भी मिल नहीं रही थी। वह आलोक को उतनी दूर से बुलाकर परेशान नहीं करना चाह रही थी। एक बार सर ने ही बताया था, यमुना एक्सटेंशन 3 में उनका घर है और वह यमुना एक्सटेंशन 1 में रहती थी। जाना तो उन्हें भी उसी रास्ते था पर...

''सर मैं आप को परेशान नहीं करना चाहती। मैं चली जाऊँगी।''

''परेशानी की क्या बात है, मैं भी तो घर ही जा रहा हूं।''

''आपको दिक्कत होगी सर, मैं थोड़ी देर और वेट कर लेती हूं। कोई न कोई टैक्सी मिल ही जाएगी। वरना मैं अपने हसबैंड को बुला लूंगी।''

कहने को तो उसने कह दिया कि वह टैक्सी का इंतज़ार कर लेगी, पतिदेव को बुला लेगी, पर मन का एक कोना यह भी कह रहा था। अलका चुपचाप गाड़ी में बैठ जा...इस बात की क्या गारंटी की टैक्सी मिल ही जाए, वैसे भी तुझे लेट हो गई है। अम्मा जी की दिल भेदने वाली नज़र उसे यहां भी महसूस हो रही थी।

''दिक्कत कैसी, मैं भी वहीं जा रहा हूं।''

''ओके सर! जैसा आप कहें।''

देर तो हो ही रही थी, अलका अब कोई रिस्क नहीं लेना चाहती थी। सड़कों पर भीड़ कम हो गई, होनी भी थी साढ़े दस बज रहे थे। गाड़ी हवा से बातें कर रही थी, होने को तो अतुल के पास भी गाड़ी थी, पर इस गाड़ी की बात ही कुछ और थी। सुना था छह महीने पहले की बुकिंग चल रही थी।

''सर बस यहीं....!''

अलका ने इशारा किया।

अच्छा! आप यहां रहती हैं।

सर ने कार के शीशे उतारे और गर्दन झुका कर थोड़ा बाहर निकाल लिया। गाड़ी की आवाज सुन अम्मा जी बालकनी में निकल आई। लगता है आलोक अभी नहीं आए थे पोर्च में उनकी गाड़ी नहीं खड़ी थी। अदिति को भी तो घर ड्रॉप करना था।

''सर एक कप चाय पीकर तो जाइए।''

शिष्टाचार वश उसने कह तो दिया पर अम्मा जी...?

''फिर कभी...अब तो सीधे घर ही जाऊँगा। काफी देर हो गई है।''

सर ने अपनी कीमती घड़ी पर नज़र डालते हुए कहा, अंधेरे में घड़ी के नग चमक उठे। शायद डायमंड कुछ भी हो उससे मुझे क्या? अलका ने अपने मन को समझाया, हर महीने इतनी लंबी–चौड़ी सैलरी अकाउंट में जा रही है, वे नहीं पहनेंगे तो क्या हम पहनेंगे। उस ने शादी में मिली पांच साल पुरानी अपनी घड़ी पर नज़र डालते हुए सोचा।

अम्मा जी दरवाज़े पर ही मिल गई। उनकी आँखों में कुछ था, जिसे वह चाहकर भी पढ़ना नहीं चाहती थी।

''आज बड़ी देर हो गई, राजमा भिगोकर गई थी। बस अभी बनाती हूँ।''

''मैंने बना लिया है और पराठे भी सेंक लिए हैं। तुम लोगों का खाना मेज पर रख दिया है।''

अम्मा की आवाज़ में एक तीखापन था। उसने कई बार इस संदर्भ में आलोक से बात की थी और आलोक हर बार उसकी बात हवा में उड़ा देते।

''अम्मा की शुरू से ही ऐसे ही बोलने की आदत है। उनकी बात का क्या बुरा मानना।''

पर क्या यह कहने से समस्याएं हल हो जाती थीं?

''और आप...?''

''मैंने खा लिया है, भूख तो समय से ही लगेगी, तुम्हारे आने का इंतज़ार थोड़ी करेगी।''

अलका खुश भी थी और दुखी भी...खुश इसलिए थकान के मारे कुछ भी करने का मन नहीं कर रहा था और दुखी इसलिए कि घर में स्वागत अम्मा के तानों से हुआ था।

''आलोक कहां रह गया, उसका कोई फोन आया था।''

''आते ही होंगे अपनी सेक्रेटरी को छोड़ने गए थे।''

अलका कपड़े बदलने के लिए बेडरूम में घुस गई। रसोई

घर से बर्तन के खटर–पटक की आवाज़ आ रही थी। शायद आलोक आ गए थे। अलका ने जल्दी से कपड़े बदले। ड्राइंग रूम से टी वी की आवाज़ आ रही थी, आलोक मेज पर पैर फैलाए बैठे हुए थे। सामने पानी का एक गिलास और बेसन के लड्डू रखे हुए थे, जो अम्मा जी अपने साथ लाई थी। उसने फ्रिज से बोतल निकाली और पानी को गले के नीचे उतार लिया। क्या किस्मत पाई है उसने घर में थके–मांदे आओ, कोई एक गिलास पानी पूछने वाला भी नहीं है।

आलोक के मोजे और जूते कालीन पर औंधे मुंह पड़े हुए थे। अलका ने जूते उठाते हुए कहा–

''कपड़े बदल लीजिए। मैं खाना लगाती हूं।''

''कब आई?''

''बस थोड़ी देर पहले...''

आलोक ने चैनल बदलते हुए कहा

''कैब मिल गई थी?''

''कहां मिली, दो–दो बार कैंसिल हो गई थी। वह तो सर एक्सटेंशन 3 में रहते हैं। उन्होंने ऑफर किया कि तो मैं उन्हीं के साथ चली आई।''

आलोक बेडरूम की ओर बढ़ गए। अलका खाना गर्म करने लगी। काफी देर हो गई थी आलोक को कपड़े बदलने में...अलका सोच रही थी। खाना भी ठंडा हो रहा। वह बेडरूम की ओर बढ़ गई। कमरे से अम्मा और आलोक की आवाज़ आ रही थी। शायद बात का मुद्दा अलका ही थी, उसके कदम ठिठक गए।

''क्या जरूरत है नौकरी करने की...घर–गृहस्थी देखे।''

''देख तो रही है, अब कैसे देखेगी!''

''इसे देखना कहते हैं, आने–जाने का कोई समय नहीं, खुद ही इतना थकी रहती है वह तुम्हारी क्या सेवा करेगी।''

''अम्मा अब मैं कोई बच्चा तो रहा नहीं अपनी देखभाल खुद कर सकता हूं।''

''और परिवार... सास के लिए दो मिनट का समय नहीं है। तीज–त्यौहार, शादी–ब्याह में इनको छुट्टी नहीं मिलती। ऐन कार्यक्रम वाले दिन पहुँचेंगी।''

''समझना होगा सबको... मुझे ही कौन सी छुट्टी मिलती है।''

''तुम्हारी बात अलग है।''

''अलग मतलब वह भी नौकरी कर रही है।''

''उसकी भी परिवार और नाते–रिश्तेदारों के प्रति जिम्मेदारियाँ हैं।''

''ऐसे कैसे छोटी–छोटी बातों के लिए वह दौड़–दौड़ कर पहुँच जाए।''

आलोक अम्मा की बात का मुंहतोड़ जवाब दे रहे थे, पर आज अम्मा जी कोई भी बात सुनने को तैयार नहीं थी।

''वहाँ रहो तो उनकी गृहस्थी देखो यहां रहो तो तुम्हारी... हमें तो कहीं भी चैन नहीं।''

''अम्मा अलका तो शादी के पहले से नौकरी कर रही है, फिर अब ये शिकायत क्यों?''

''बाल–बच्चा भी करना है या जिन्दगी भर नोट ही छापना है।''

''क्या अम्मा तुम बात कहां से कहां ले जाती हो।''

''आलोक तुम समझते नहीं हर चीज एक उम्र तक ही अच्छी लगती है।''

''हम्म!''

''तुझ से एक बात कहनी थी।''

''बोलो अम्मा...!''

''पता नहीं मैं सही हूं या गलत पर कल दुनिया वाले कुछ कहे बात बनाए तो अच्छा नहीं लगेगा।''

''क्या हुआ किसी ने कुछ कहा?''

''आज अलका अपने बॉस के साथ इतनी रात में अकेली आई थी। मुझे कुछ ठीक नहीं लगा।''

''अम्मा आप भी...कुछ भी कहती हैं।''

''अलका के मन में भले कुछ न हो, पर मर्द की जात का क्या भरोसा।''

अलका का मन खिन्न हो गया, आलोक ने क्या कहा, क्या सुना अब यह सुनने की न उसकी कोई इच्छा थी और न ही कोई मन...आलोक क्यों नहीं कह पाए कि इस बड़े शहर में जब तक अपना मकान नहीं हो जाएगा, तब तक माता–पिता न बनने का फैसला उनका है, अलका अकेले इस फैसले की जिम्मेदार नहीं। कितना फर्क था आलोक और अलका के ऑफ़िस से लेट आने पर...आलोक लौटते

थे ड्रॉइंग रूम के सोफे पर, डायनिग टेबल की मेज पर, बेडरूम के बेड पर और वह लौटती थी भीगे हुए राजमा के लिए, फ्रिज में खत्म होती सब्जियों के लिए, बिजली और केबिल वाले के बिल के लिए, घर की साफ–सफाई से साज–सज्जा के लिए, मिसेज सिंह से पत्नी और बहू के लिए...!

नौकरी तो आलोक भी करते थे मर्द तो वह भी थे। बेटा अपनी सेक्रेटरी को पहुँचा कर आए तो वह दयालु, मददगार और बहू अपने साथी कर्मचारी या बॉस के साथ आए तो हजारों जहरीले सवाल उसके चरित्र पर उठ जाते हैं। कितना फर्क था दोनों के लौटने में...वह छली जा रही थी रोज अपनों से, वह जल रही थी रोज अपनों के बनाए लाक्षागृह में...औरत की अग्नि परीक्षा शायद कभी ख़त्म नहीं होगी।

डॉ. रंजना जायसवाल
मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश

मैं

अपनी खामोशी में छिपा मैं सैलाब रखता हूं
मैं तेरे हर सवाल का जवाब रखता हूं
नापने की कोशिश मत कर मेरी शख्सियत को
अपनी औकात से बड़े मैं अपने ख्वाब रखता हूं
तुम्हें लगता है सुनता रहता हूं बेफिक्रों सी बातें तेरी
पर अंदर हर बात का हिसाब रखता हूं
दोस्तो से बेइंतहा दोस्ती, दुश्मनों से अदब की दुश्मनी
मैं तेरी तरह चेहरे पे ना कोई नकाब रखता हूं
हंसते हो मेरी नादानियों को देख के तुम
लंकापति सा खुद मे मैं ज्ञान रखता हूं
सूरज छिप गया डर के रात से
मैं हर अंधेरे से टकराने का अभिमान रखता हूं
पूछता नहीं मैं अब किसी से कि कब तक साथ दोगे
मैं समय के सामने अपने सवाल रखता हूं
तुम मुझे खो दोगे तो अफसोस होगा तुम्हें
मैं अब खुद के अंदर ना कोई मलाल रखता हूं।

निशांत कुमार
अनुभाग अधिकारी, रेलवे बोर्ड

कंक्रीट के जंगल में

कंक्रीट के जंगल में, सूर्यास्त कहां देख पाओगे
नदियाँ जो ये सूख गईं तो, पानी कहां से लाओगे।

शहर के इन बंद कमरों में न जाने कब
शाम और रात होती है
सुबह को दिखते, अब कहां, ओस के गीले मोती हैं।

सड़क पर गाड़ियों का यहां चल रहा है राज
सोचो कल क्या होगा जो ये सब देख रहे हैं आज

एसी और सूरज में जैसे गर्मी की है होड़
सभी भाग कर शहर को आ गए गांव से नाता तोड

ये कंक्रीट का जंगल, कभी बाढ़ तो कभी देख रहा है सूखा
रोजगार से सबकी भूख मिटाता ये खुद रह गया भूखा

चांद भी धुएं के कारण धुंधला सा नजर आ रहा है
सोच में है सब, की रो रहा या मुस्कुरा रहा है

व्यस्तता है इतनी कि आपस में बात नहीं होती है
गाँव नहीं शहर है यह यहाँ रात नही होती है

सड़कें हैं इतनी लंबी बन गईं ता उम्र दूर कहां तक जाओगे
कंक्रीट के जंगल में, अब सूर्यास्त कहां देख पाओगे

गौरव चाँदना
वरि. अनु. अधिकारी, उत्तर रेलवे, बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा रेल कार्यालयों के निरीक्षण की झलकियां

रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड), नई दिल्ली